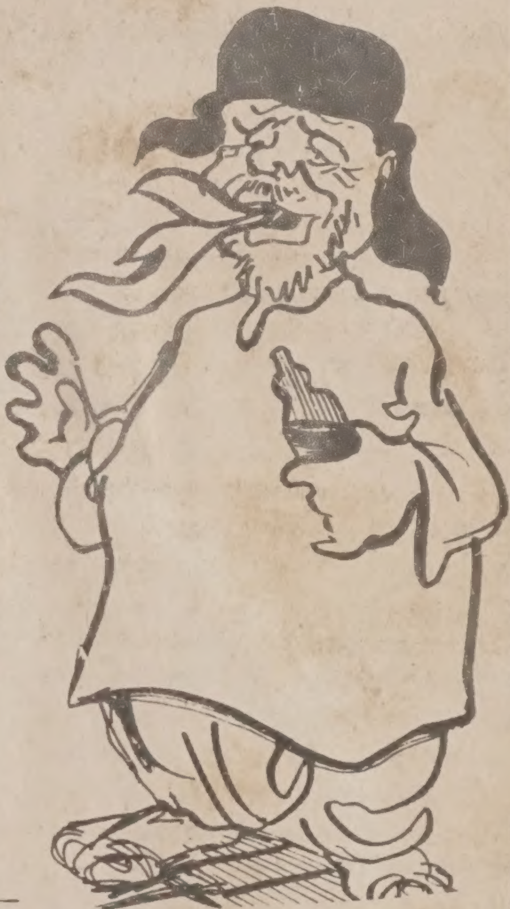
प्रेम पत्र



प्यारे कॉमरेड श्री राजनारायण जी महाराज

सादर प्रणाम !

पिछले डेढ़ साल में मैंने आपकी बढ़ती हुई सत्ता को देखकर रामायण और महाभारत की नई प्रतियां खरीदीं और उनको रटना शुरू किया। मैंने समझा कि ऐसा करने से जल्दी ही मैं लोक सभा का सदस्य बन जाऊंगा और कम-से-कम स्वास्थ्य मंत्री जरूर बन जाऊंगा।

परन्तु मुझे बहुत खेद है कि आप इस समय में देश का तो क्या देश के महारथी भूतपूर्व गृहमंत्री श्री चरणसिंह जी का स्वास्थ्य भी ठीक न रख सके। यदि आप केवल उनके स्वास्थ्य का ध्यान रख पाते तो भी मुझे इतना अफसोस न होता। अब तो अफसोस इस बात का है कि आप उनका राजनीतिक स्वास्थ्य भी ठीक न रख सके। कहां तो वे प्रधान मंत्री बनने के ख्वाब देख रहे थे आपने उन्हें एक मामूली मिनिस्टर भी न रहने दिया।

असल में आपका भी इसमें लम्बा-चौड़ा कसूर नहीं है। यों तो लोग ख्वाम-खां आपको मदारी या जोकर की पदवी देते हैं परन्तु वह ये भूल जाते हैं कि आप गलत फहमी से मिनिस्टर बन गये थे। आपने फरमाया कि अब "दुल्हन" जनता पार्टी से आपका मन खट्टा हो गया है लेकिन तलाक की नौबत नहीं आई। अच्छा तो यही होता कि आपका तलाक शादी से पहले ही हो जाता। इससे आपका भला होता या न होता जनता पार्टी की जिन्दगी कुछ लम्बी हो जाती।

आपका

27-78

चिल्ली

मुख पृष्ठ पर

चलती साइकिल देखकर
पिलपिल खड़ा चकराय,
आज चिल्ली की नज़र से
नाहीं फल बचा रह जाय।



दीवाना

अंक : २७, ३ अगस्त से ९ अगस्त १९७८ तक
वर्ष : १४

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृष्ण शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे
छमाही: २५ रु०
वार्षिक: ४८ रु०
द्विवार्षिक: ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिए पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

काका के कारतूस

मनप्रीत सिंह, अमृतसर (पंजाब)

प्र० : मन का पतझड़ कब महसूस होता है ?

उ० : आशा चोटी पर चढ़े, पल्ले पड़ी निराश,
मन पतझड़ होने लगा, टूट गया विश्वास ।

तेहसीनुद्दीन, मोहुसीनुद्दीन, जाफराबाद

प्र० : जिन्दगी में वह कौन-सी चीज है, जो एक बार जाने के बाद फिर नहीं आती ?

उ० : बहुत सी चीज जीवन भर मयस्सर होती रहती हैं,
मगर गुजरा हुआ बचपन, कभी वापिस नहीं आता ।

वेद प्रकाश 'वेद', तिनसुकिया (असम)

प्र० : कुछ मर्द, सुर, सुरा-सुन्दरी को महत्व देते हैं तो औरतें ?

उ० : सजनी देती इन पर ध्यान, साजन-साड़ी औ संतान ।

ओम पुजारी, कृष्णराज 'नवीन', दुलियाजान (असम)

प्र० : दिल की धड़कन और घड़ी की टिकटिक में क्या फर्क है ?

उ० : घड़ी बन्द हो जाए तो ठीक करे, फन-साज,
दिल की धड़कन गई तो, कोई नहीं इलाज ।

प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया, मण्डला

प्र० : पाप करते समय मनुष्य क्या सोचता है ?

उ० : आंखें होते हुए भी, वह अंधा हो जाय,
पाप कर्म के ताप से, ज्ञान बुद्धि खोजाय ।

सुखदेव पाल, घुमसाटोली, रांची

प्र० : जब प्रेमिका, प्रेमी को ठुकरा देती है, तब क्या होता है ?

उ० : आशा की बिजली बुझे, मिट जाएं सब भ्रांति,
उथल-पुथल सब दूर हों, प्राप्त होय सुख शांति ।

हाजी मोहम्मद छीपा, जोधपुर

प्र० : काकाजी, प्रश्नों के उत्तर देने पर आपको क्या मिलता है ?

उ० : जिनके दिल को 'टच' करे, दोहा अथवा शेर,
काका कवि को भेजते, वाह वाह के ढेर ।

महेश कुमार छाबड़ा, इन्दौर

प्र० : आपकी तरह, पाठक भी अपने प्रश्न कविता में भेजने लगें तो ?

उ० : तोड़े दीवाने सभी, कविताओं की टांग,
प्रश्न और उत्तर दोऊ, हो जाएं विकलांग ।

कामाख्या प्रसाद पचीसिया, कलकत्ता

प्र० : उम्र में आप बड़े हैं या काकी ?

उ० : काकी अक्ल में बड़ी, बड़े उम्र में हम,
गप्प लड़ाने में नहीं, कोई किसी से कम ।

किशनलाल अग्रवाल, रांची (बिहार)

प्र० : अराजकता और मँहगाई बढ़ रही है, क्या होगा काका ?

उ० : अभी प्रतीक्षा कीजिए, दीख रहे आसार,
यह बीमारी बढ़े तो, बदल जाय सरकार ।

जुगनू व छोटू, कण्डाघाट (सोलन)

प्र० : जो आदमी मार्ग से भटक जाय वह क्या करे ?



उ० : रास्ता कुछ सूझे नहीं, हो जाए मजबूर,
बीच सड़क पर लेट जा, सब मुश्किल हों दूर ।

राकेश बख्शी, प्यासा, रेवाड़ी

प्र० : पढ़कर जवाब आपकी हालत खराब है,
उल्टी जैसे बोतल, बिखरी शराब है ।

उ० : बोतल तो फोड़ दीजिए, यह काम कीजिए,
जो गिर पड़ी शराब, उसे चाट लीजिए ।

बिन्दु भाटिया, गाजियाबाद

प्र० : संजय को बन्द किया फिर छोड़ दिया, यह क्या तमाशा हो रहा है काका ?

उ० : एक सीन को देखकर, खुश हो या गमगीन,
अभी देखते जाइए, बाकी हैं दो सीन ।

खुशाल चन्द्र सोनी, पनागर (जबलपुर)

प्र० : काका जी, आपके जैसा बनने के लिए, क्या करना होगा ?

उ० : प्रथम कीजिए अध्ययन, फिर कविजन का संग,
सीख जायेंगे आप भी तुकबन्दी के ढंग ।

अनिल अग्रवाल, फालना (राजस्थान)

प्र० : आपकी दाढ़ी की लम्बाई कितनी है काका ?

उ० : कैसे बतलाऊं तुम्हें, खुद मालूम नहिं मोहि
छटती-कटती रहे नित, नीची-ऊंची होहि ।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

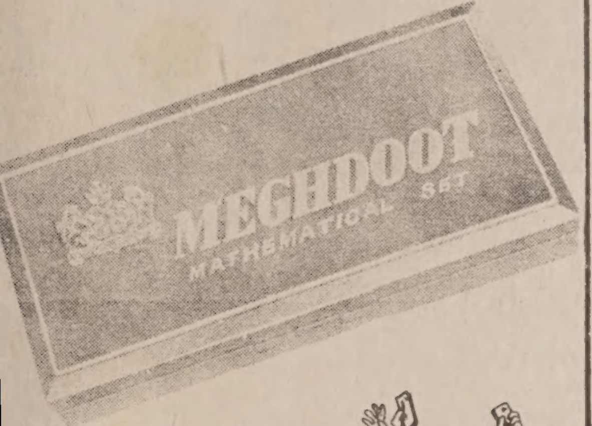
काका के कारतूस
दिल्ली बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली 110002

MEGHDOOT

पहली बार

अनब्रेकेबल
प्लास्टिक से बना
मज़बूत, सही, सुन्दर
मैथेमैटिकल सैट

मेघदूत



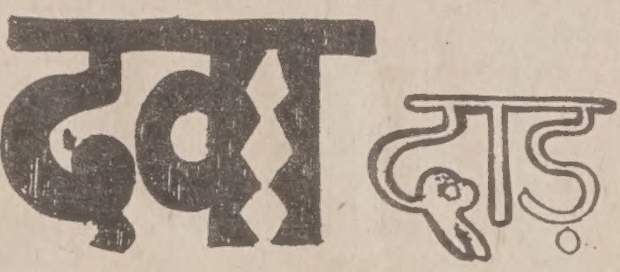


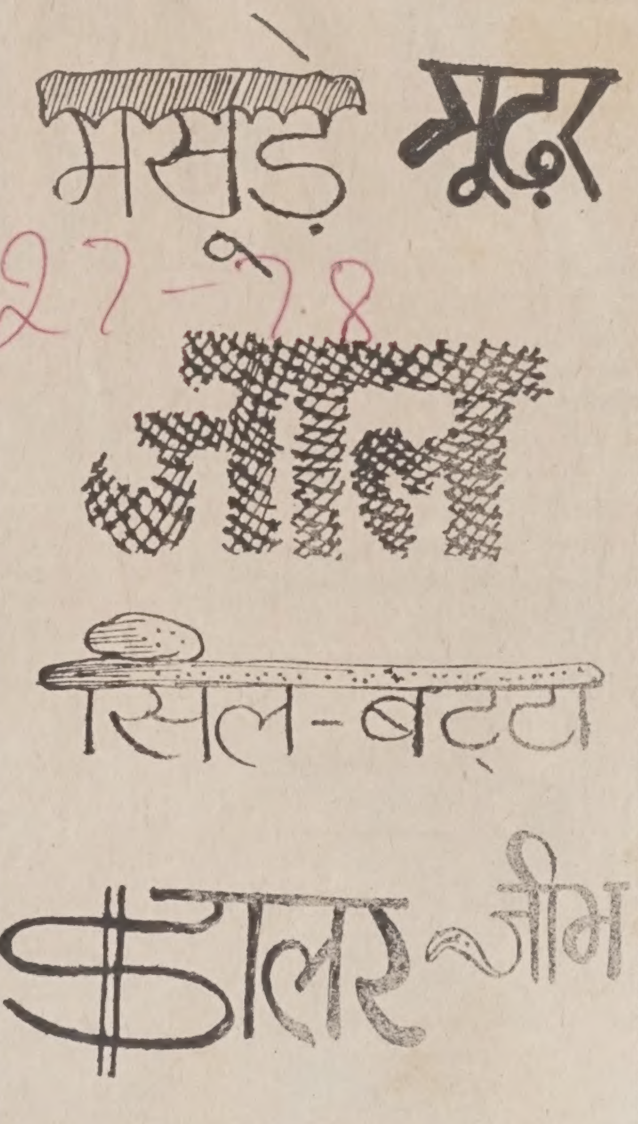
होनहार बच्चों का
अटूट साथी

मेघदूत इन्डस्ट्रीज़ (इन्डिया)
५, कम्यूनिटी सेन्टर, लारेन्स रोड
इन्डस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-११० ०३५

टॉकिस्ट : दिल्ली — शिवदयाल रामनिवास, सदर बाज़ार;
ान चंद त्रिलोक चंद, सदर बाज़ार: मुसद्दीलाल चन्द्र प्रकाश, सदर बाज़ार.
ुना — भारत सेल्स कॉर्पोरेशन, बालाजी मंदिर बिल्डिंग

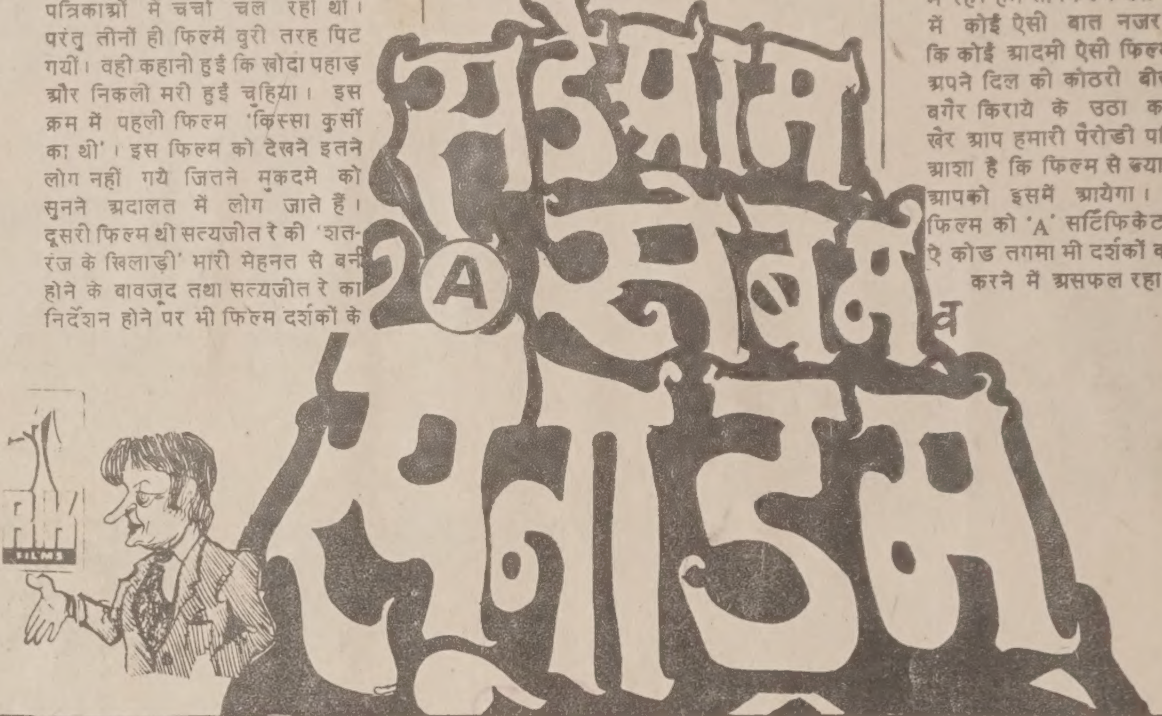
बोलते अक्षर





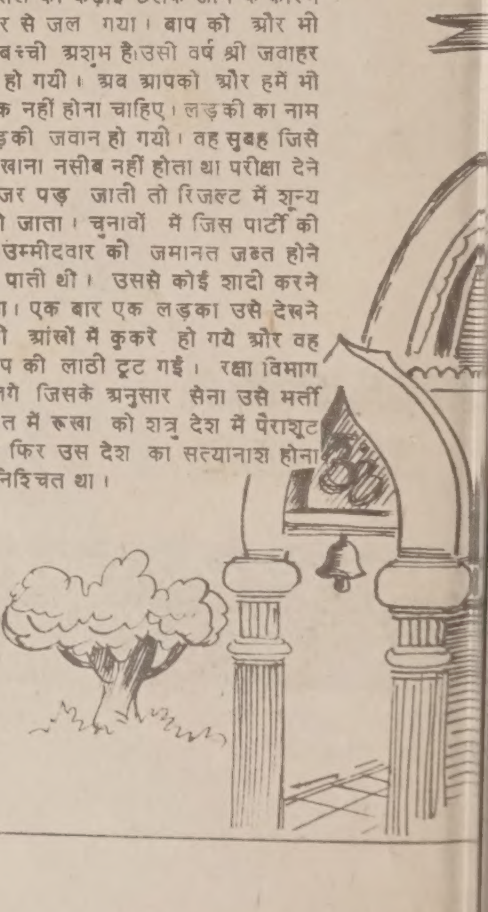
27-9-78

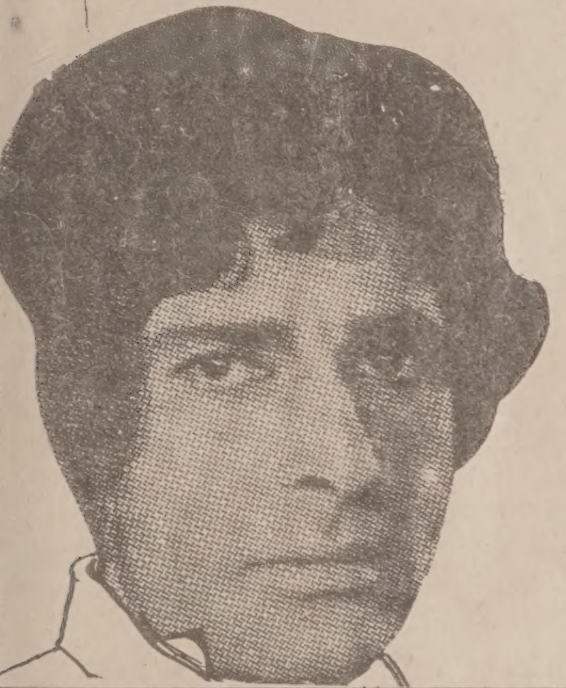
इस वर्ष तीन ऐसी फिल्में आईं जिनका पहले बहुत शोर मचा कर रखा गया था। लगभग एक दो वर्ष से उनकी बड़े जोर-शोर से विज्ञापन व पत्र-पत्रिकाओं में चर्चा चल रही थी। परंतु तीनों ही फिल्में बुरी तरह पिट गयीं। वही कहानी हुई कि खोदा पहाड़ और निकली मरी हुई चुहिया। इस क्रम में पहली फिल्म 'किस्सा कुर्सी का थी'। इस फिल्म को देखने इतने लोग नहीं गये जितने मुकदमे को सुनने अदालत में लोग जाते हैं। दूसरी फिल्म थी सत्यजीत रे की 'शतरंज के खिलाड़ी' भारी मेहनत से बनी होने के बावजूद तथा सत्यजीत रे का निर्देशन होने पर भी फिल्म दर्शकों के गले नहीं उतरी। इसी क्रम की तीसरी फिल्म है 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्।' कहते हैं कि इस कहानी पर फिल्म बनाने का सपना राज कपूर अपने दिल में पाले रहे। कहानी उन्हें इतनी प्रभावित कर गई कि उनके दिमाग पर बीस वर्ष तक छायी रही। वह उसे फिल्माने के उचित मौके की तलाश में रहे। हमें तो फिल्म देख कर कहानी में कोई ऐसी बात नजर नहीं आई कि कोई आदमी ऐसी फिल्म कथा को अपने दिल की कोठरी बीस वर्ष तक बगैर किराये के उठा कर दे रखे। खैर आप हमारी पैरोडी पढ़िये। हमें आशा है कि फिल्म से ज्यादा आनन्द आपको इसमें आयेगा। (सैंसर ने फिल्म को 'A' सर्टिफिकेट दिया है ऐसे कोड तगमा भी दर्शकों को प्रभावित करने में असफल रहा है।)



एक गांव में एक पुजारी जी थे—श्री सत्यनारायण जी के कथा के पुण्य स्वरूप उनके एक बच्ची पैदा हुई। बच्ची जन्मते समय मां की मृत्यु हो गई—इस पर सबने कहा कि यह बच्ची अपशकुनी है। बात ठीक भी थी, उसी वक्त अक्तूबर में नेफा और लद्दाख में चीन ने भारत पर हमला कर दिया। अब किसी को शक की कोई गुंजाइश नहीं रही। बच्ची बढ़ने लगी तो एक बार उसकी जिद्द पर पास की गली में रहने वाले खिलौने वाले ने उसका जन्म दिन मनाना चाहा (बाप तो उससे नफरत करता था)। वहां उबलते तेल की कढ़ाई छलक जाने के कारण बच्ची का चेहरा दायीं ओर से जल गया। बाप को और भी पक्का यकीन हो गया कि बच्ची अशुभ है। उसी वर्ष श्री जवाहर लाल नेहरू की भी मृत्यु हो गयी। अब आपको और हमें भी उसकी मनहूसियत पर शक नहीं होना चाहिए। लड़की का नाम रूपा था। समय पाकर लड़की जवान हो गयी। वह सुबह जिसे मिल जाती उसे उस दिन खाना नसीब नहीं होता था परीक्षा देने जाते बच्चों पर उसकी नजर पड़ जाती तो रिजल्ट में शून्य नम्बर पाना भी कठिन हो जाता। चुनावों में जिस पार्टी की सभा में वह जाती उसके उम्मीदवार को जमानत जब्त होने से कोई ताकत नहीं बचा पाती थी। उससे कोई शादी करने को भी तैयार नहीं होता था। एक बार एक लड़का उसे देखने आया तो उसी दिन उसकी आंखों में कुकरे हो गये और वह अन्धा हो गया, उसके बाप की लाठी टूट गई। रक्षा विभाग वाले एक योजना बनाने लगे जिसके अनुसार सैना उसे भर्ती करती। युद्ध होने की हालत में रूपा को शत्रु देश में पैराशूट से उतार दिया जाता और फिर उस देश का सत्यानाश होना निश्चित था।



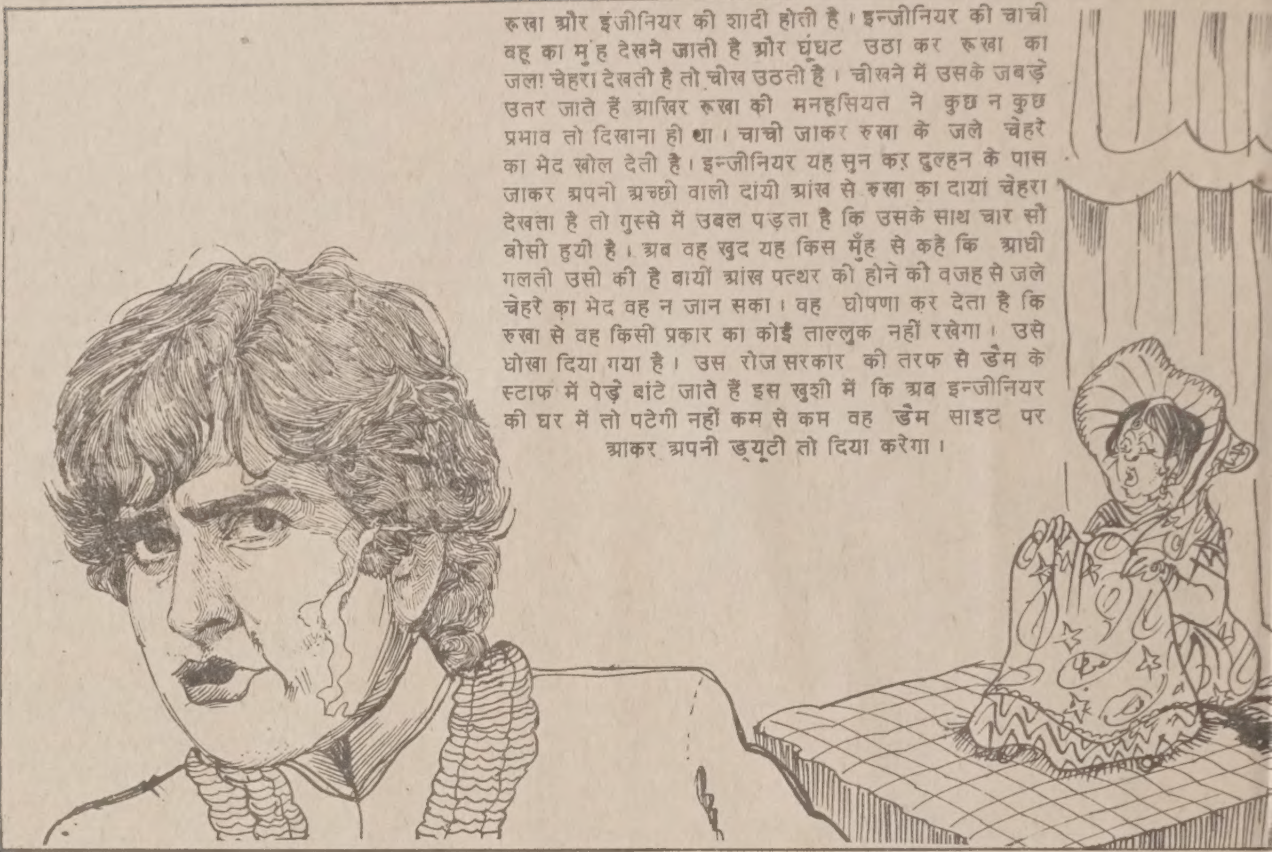




उन्हीं दिनों उस गांव के पास एक डैम बनने की योजना बनी। डैम पर काम करने एक युवक इन्जीनियर साहब भी आये। सुबह उठने पर उन्होंने रूखा का गाना सुना। रूखा सुबह-सुबह गाना जरूर गाती थी। इससे रात का खाना अनपचा रह गया होता तो पच जाता था। गाना सुन कर इन्जीनियर ने चौकीदार से गाने वाले की बाबत में पूछा। चौकीदार ने रूखा का नाम बता दिया और उसकी मनहूसियत के बारे में भी चेतावनी दे दी। चौकीदार की चेतावनी का उस पर कोई असर नहीं हुआ। इन्जीनियर खुद भी कामचोर था, जहां डैम बनता है वहां के इन्जीनियरों को दिन रात फुर्सत नहीं मिलती। उनके दिमाग में डैम और उसके नेटों से झरते हुये पानी का नक्शा ही छाया रहता है। खैर साहब यह तो फिल्मी इंजीनियर हुए, उनकी पहली ड्यूटी गाने वालियों का सुराग लगाने का राष्ट्रीय महत्व का काम पूरा करना है। गांव की सारी लड़कियां इंजीनियर साहब पर मरती थीं। साहब ने उनसे रूखा का पता पूछा तो वे झूठमूठ स्वयं को रूखा बताने लगीं। गांव की लड़कियों का उस पर रीझने का असली कारण उसका स्मार्ट होना नहीं था बल्कि यह था कि सबको पता था यह भाई अपनी ड्यूटी करता नहीं है। आज नहीं तो कल नौकरी से जरूर निकाला जायेगा और अपनी दो आने वाली जगह आ जायेगा यानि गोबर उठाने का काम करेगा। गांवों में सबसे जरूरी तो यही चीज है। जिससे भी उसकी शादी होती गोबर वगैरह उठाने की सहूलियत हो जाती। खैर, एक जलसे में इंजीनियर को असली रूखा का पता लग गया।

अब इंजीनियर और रूखा आपस में मिलने लगे, उनमें प्यार हो गया। रूखा ने इंजीनियर को जले चेहरे को कभी देखने नहीं दिया। कभी वह पल्लू से उसे ढके रहती, कभी उस निशान पर बाल गिरा देती, तो कभी घास खेंच लेती। गांव में तो सबको पता था कि रूखा का चेहरा जला है। कोई न कोई इसका जिक्र इंजीनियर से जरूर करता लेकिन यह तो फिल्म है। यहां गांव वाले रूखा के जले चेहरे का राज उसी प्रकार छिपा कर रखते हैं जैसे अमरीका व रूस अपने ऐटमी सीक्रेट। राजकपूर ने गांव वालों के रोल कर रहे कलाकारों को समझा रखा था कि किसी ने यह भेद खोल दिया तो उसकी मजदूरी के पैसे काट दिये जायेंगे। रूखा ने जिस खूबी से इंजीनियर से अपने जले वाले चेहरे के भाग को छिपाया, वास्तव में उसकी जरूरत नहीं थी। खुद इन्जीनियर की बायीं आंख पत्थर की थी जिसका भेद वह स्वयं बड़े जतन से दूसरों से छिपा कर रखता था। खुदा मिलाई जोड़ी एक अंधा तो एक कोढ़ी। बोल सियापति रामचन्द्र की जै।

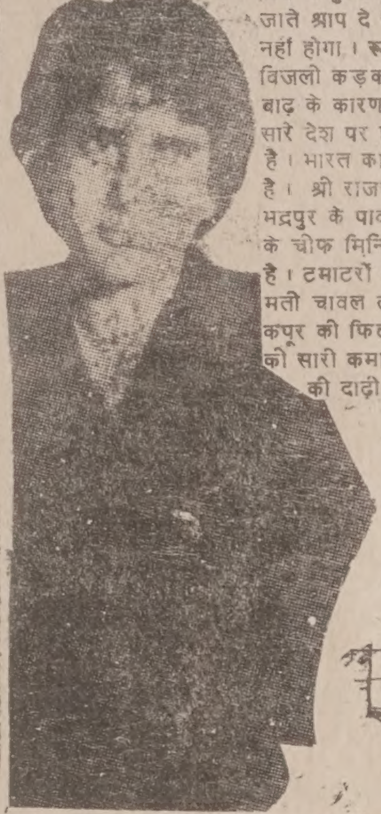




रूखा और इंजीनियर की शादी होती है। इन्जीनियर की चाची बहू का मुंह देखने जाती है और घूंघट उठा कर रूखा का जला चेहरा देखती है तो चीख उठती है। चीखने में उसके जबड़े उतर जाते हैं आखिर रूखा की मनहूसियत ने कुछ न कुछ प्रभाव तो दिखाना ही था। चाची जाकर रुखा के जले चेहरे का भेद खोल देती है। इन्जीनियर यह सुन कर दुल्हन के पास जाकर अपनो अच्छी वाली दांयी आंख से रुखा का दायां चेहरा देखता है तो गुस्से में उबल पड़ता है कि उसके साथ चार सौ बीसी हुयी है। अब वह खुद यह किस मुँह से कहे कि आधी गलती उसी की है बायीं आंख पत्थर की होने की वजह से जले चेहरे का भेद वह न जान सका। वह घोषणा कर देता है कि रुखा से वह किसी प्रकार का कोई ताल्लुक नहीं रखेगा। उसे धोखा दिया गया है। उस रोज सरकार की तरफ से डैम के स्टाफ में पेड़े बांटे जाते हैं इस खुशी में कि अब इन्जीनियर की घर में तो पटेगी नहीं कम से कम वह डैम साइट पर आकर अपनी ड्यूटी तो दिया करेगा।

अब इन्जीनियर मारा-मारा फिरता है। उसे रूखा के गाने की आवाज सुनाई पड़ती है वह वहां पहुंचता है तो रूखा को पाता है। रूखा ही घर से भाग कर प्रेयसी रूखा के रूप में उसे मिलती है। इन्जीनियर उसको असली रूखा जिससे वह प्रेम करता था, समझ कर उससे रोमांस लड़ाता है। वह दोनों प्रायः रात को मिलते हैं अतः इन्जीनियर पर जले चेहरे का भेद नहीं खुलता। इसी नकली प्रेम प्रसंग में वह दोनों कई हजार फुट रील को खत्म कर देते हैं। इसी प्रेम व्यापार के फलस्वरूप कुछ महीने का समय पाकर रूखा गर्भवती हो जाती है। इन्जीनियर अपने घर में अपनी पत्नी को गर्भवती हुआ देख आपे से बाहर हो जाता है। वह उस पर कुलटा होने का दोष लगता है और घर से निकल जाने के लिये कहता है। रूखा उसे बताती है कि वही वह रूखा है जो उसे प्रेयसी के रूप में मिलती रही है। परन्तु इन्जीनियर को विश्वास नहीं आता।

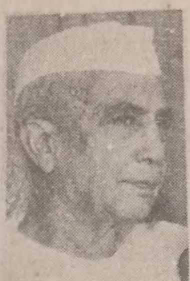


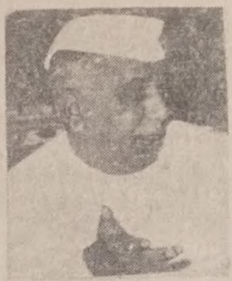


अंत में गुस्से में रूखा उसे छोड़ करजाने लगती है और जाते-जाते श्राप दे जाती है कि उसे जिन्दगी में कभी प्यार नसीब नहीं होगा। रूखा के जाने के साथ ही बादल गरजने लगते हैं बिजली कड़कड़ती है और घनघोर वर्षा आरम्भ होती है। बाढ़ के कारण बांध बहने लगता है। अब रूखा की मनहूसियत सारे देश पर छाने लगती है। इंजीनियर की नौकरी छूट जाती है। भारत का निर्यात घट जाता है और आयात बढ़ जाता है। श्री राजनारायण को मितलियां आनी शुरू हो जाती हैं। भद्रपुर के पावर प्लांट के दो यूनिट ठप्प हो जाते हैं। हरियाणा के चीफ मिनिस्टर देवीलाल का तख्ता पलटने वाला हो जाता है। टमाटरों के भाव सात रुपये किलो हो जाते हैं और बासमती चावल तो साढ़े सात रुपये तक पहुंच जाता है। राज कपूर की फिल्म सत्यम् शिवम् सुन्दरम् पिट जाती है। बॉबी की सारी कमाई हाथ से निकलने लग जाती है। श्री चंद्रशेखर की दाढ़ी में सफेद बालों की संख्या बढ़ने लगती है।



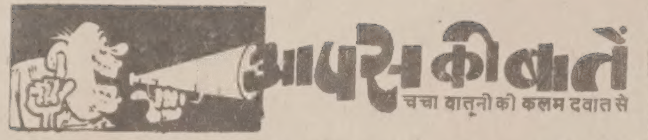
श्री चरणसिंह और राजनारायण केन्द्रीय मन्त्रीमंडल से इस्तीफा दे देते हैं। देवीलाल व चंद्रावती बयान जारी करते हैं कि वह दिल्ली में एक करोड़ किसानों की विशाल रैली करेंगे। किसानों को पहले चरणसिंह सम्बोधित करेंगे। उसके बाद रूखा उन्हें बतायेगी कि किन परिस्थितियों में उसे इंजीनियर का घर छोड़ना पड़ा। रामनरेश यादव को गैस्ट्रिक ट्रबल हो जाती है और उन्हें लोहिया हस्पताल में भर्ती किया जाता है। दिल्ली के भूतपूर्व उपराज्यपाल श्री कृष्ण चन्द्र कुयें में कूद कर आत्महत्या करते हैं। श्री चरणसिंह सूरज कुण्ड से चले आते हैं। महाराष्ट्र में कांग्रेस व कांग्रेस आई की मिली-जुली सरकार का तख्ता पलट जाता है। अफगानिस्तान में सैनिक क्रांति में दाऊद मारे जाते हैं। पाकिस्तान में पत्रकारों को चौराहों पर चाबुक लगाये जाते हैं। कांग्रेस में फूट पड़ जाती है। (कृपया पाठक नोट करें, अब से यदि आपको दीवाना लेट मिले तो हमें दोष मत दीजियेगा। यह सब रूखा की मनहूसियत के कारण ही होगा।)











अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

इरशाद हंसराज, पानीपत : डीयर अंकल, जिन्दगी किस चिड़िया का नाम है ?

उ० : जन्दगी इक झूठ है, क्या लोगे यह सच बोल के,
सीपियों से लाये हैं पत्थर को जैसे रोल के।
बेसुरा हर सुर है, सर धुनते हैं जिसकी धुन पे हम,
कहने क्या इस ढोल और इसकी पोलमपोल के।
जिन्दगी अंडा है क्या कहने हैं गोलम गोल के,
जिसकी चिड़िया उड़ गई सौने का पिंजरा खोल के।

अब्बास अली, मेंहदी—लखनऊ : आज के युग में नेता बनने से अधिक इज्जत होती है या अभिनेता बनने से ?

उ० : ऐसा नेता बनने से जो अच्छा अभिनय कर सके।

शैलेन्द्र सिंह राना—मुरार : क्या चिल्ली जीवन भर दीवाना के मुख पृष्ठ पर ही छपता रहेगा ?

उ० : यह आपने कैसे कह दिया। क्या दीवाना का एक भी पृष्ठ ऐसा होता है जिस पर चिल्ली का असर न हो।

रोशन व्यास "त्यागी"—इन्दौर : चाचा जी अपनी जवानी का कोई रोचक किस्सा सुनाइये।

उ० : वह किस्सा बस इस एक शेर में है :
कहने लगते हैं जवानी की कहानी जो कभी,
पहले हम देर तलक बैठ के रो लेते हैं।

दिनेश मटाई 'राजा'—इन्दौर : चाचा जी, क्यों शादी कराने से इन्सान की उम्र लम्बी हो जाती है ?

उ० : हम इन्सान हैं इस बात का सबूत तो हम आपको अपनी जिन्दगी में दे सकते हैं। पर शादी के बाद उम्र की लम्बाई आप हमारे मरने से पहले पता नहीं लगा सकते।

प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया—मण्डला : क्या समय के साथ इन्सान को बदलना चाहिये ?

उ० : चौधरी चरणसिंह का असूल तो यही कहता है। पहले वे पता नहीं अपने किस-किस साथी के विरुद्ध आरोपों की फाइल बगल में दबाये फिरते थे। अब उनके मुंह से बोल नहीं निकलता।

सतीश एबट, 'रीतू'—लुधियाना : चाचा जी आपका भतीजा आपसे गाने की फरमाईश करता है, क्या आप पूरी करेंगे ?



उ० : कैसे पूरी करें ? वह मुहावरा तो सुना था "भैंस के आगे बीन बजाना।" पर आप तो भैंसे से बीन बजाने की फरमाईश कर रहे हैं।

अवतार सिंह—भटिण्डा : डीयर अंकल, एक ओर नोटों का ढेर हो और दूसरी ओर हमारे पत्रों का ढेर तो आप किस ओर जाएंगे ?

उ० : आपके पत्रों की ओर। क्योंकि आपसे दो-दो बातें करने (या दो दो हाथ करने) के साथ-साथ यहीं से हमें नोटों का ढेर भी मिलता है।

निन्दी डेविट—कपूरथला : इन्सान को अपनी गलतियों का एहसास किस उम्र में होता है।

उ० : शायद किसी उम्र में भी नहीं होता। नब्बे साल के बूढ़े आचार्य कृपलानी अभी कह रहे थे कि मैंने श्री मोरारजी देसाई को प्रधान मंत्री बना कर गलती की। और ऐसी गलती वे भविष्य में फिर कभी नहीं करेंगे। और अब कह रहे हैं, मैंने अपनी ऐसी किसी गलती के बारे में कभी कुछ कहा ही नहीं।

बाल मुकन्द अग्रवाल—लखनऊ : आप शेर-ओ शायरी बहुत अच्छी करते हैं। कृपया "दीवाना" पर कुछ शेर सुनाइये।

उ० : जो हमने बनाया है आप उसके हैं दीवाने
ये शम्मा है शम्मा के परवाने को क्या कहिये।
हैं जिन्दा इसे पाकर वो शान से जिन्दा हैं,
जो मरते हैं अब उनके मरजाने को क्या कहिये।
दिखलाये जो बहका के बहके को सही रस्ता,
उस भोले से चिल्ली के बहकाने को क्या कहिये।
जो देखे हैं दीवाना, हंस-हंस के वो कहता है,
दीवाना है दीवाना, दीवाने को क्या कहिये।

दिनेश मटाई, 'राजा'—इन्दौर : चाचा जी, ज्यादातर मर्द ही अधिक गंजे होते हैं औरतें क्यों नहीं ?

उ० : क्योंकि बाल-बच्चों के सवाल पर लाल-तिकोन उसके सर पर अधिक रगड़े लगाता है। दूसरे 'बाल' का निकटतम सम्बन्ध मर्द से है। जैसे बिशन सिंह बेदी का सम्बन्ध 'बाल' से है। तीसरे, केवल 'बाल' ही नहीं और पता नहीं कितने 'वबाल' मर्द के सर पर सवार रहते हैं, सर से 'बाल' उतारने के लिए।

केवल प्रकाश—काशीपुर : आप समाचार पत्रों में किस प्रकार के समाचार पढ़कर खुश होते हैं ?

उ० : एक समय था जब पिछले चुनाव में लोग कहते थे कि हम चाहे अपना वोट कूड़े में डाल देंगे पर 'फ़लाँ-फ़लाँ' आदमी या पार्टी को नहीं देंगे। हम उस प्रकार के समाचार पढ़कर खुश होते हैं, जिन से पता चलता है कि लोगों ने वास्तव में उस समय अपना वोट कूड़े में ही डाला था।

योगेशकुमार अग्रवाल—डीमापुर : आज का इन्सान एक दूसरे को दबाना क्यों चाहता है ?

उ० : क्योंकि आज का इन्सान दूसरे इन्सान से कैसा सलूक पाने के काबिल है, यह बात साफ नहीं है। आप ही बताइये, आपके घर में एक सांप निकल आए और एक खरगोश निकल आये, तो क्या दोनों के साथ एक जैसा सलूक करेंगे ?

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

बन्द करो बकवास


जीना यहां. मरना यहां, इसके सिवा जाना कहां···
बन्द करो बकवास, तुमने मेरी बेटी से शादी करनी हो तो करो यहां बैठ के मरने की बातें न करो। सब मरीज दूर से ही वापिस हो जाते हैं।
वैद्यराज लाजपत राय
अरे भई देख के चलो।
बन्द करो बकवास, किसी को महाशय या जनाब भी कह दिया करो। हर किसी को भाई बना लेते हो।
नन्हें-मुन्ने बच्चे तेरी मुट्ठी में क्या है ?
बन्द करो बकवास और अपने नन्हें-मुन्ने से कहो जल्दी पहेली बूझना सीखे, मेरी दाढ़ी दर्द हो रही है।

धारावाहिक उपन्यास

दूसरी आत्मा

भाग ४

लेखक संगीता

'लेकिन···मेरा···तुम्हारा···क्या सम्बन्ध है ?'

'सम्बन्ध ?' औरत के होठों पर फीकी सी मुस्कान फैल गई और वह बोली, 'क्या सचमुच तुम मुझे बिल्कुल नहीं पहचानते ?'

'न···न···नहीं···मैंने तुम्हें पहले कभी नहीं देखा ।'

'हे भगवान् ···! ' अचानक औरत की आवाज सिसक पड़ी 'क्या यही बातें सुनने के लिए पिछले चालीस बरसों से भटक रही हूं ?'

उस औरत की आंखों में आँसू आ गए···और वह भर्राई हुई आवाज में बोली—

'जरा देखो···मेरी कलाइयों में पड़ी हुई यह हरे कांच की चूड़ियां···'

औरत ने अपनी दोनों गोरी-गोरी सुन्दर कलाइयां आगे बढ़ा दीं और भारी आवाज में बोलती रही—

'जानते हो···यह किसके सुहाग की चूड़ियाँ हैं ? यह मेरे माथे पर जो लाल बिंदिया है ? यह मेरी माँग में जो सिन्दूर की रेखा जगमगा रही है यह किसके सुहाग की रेखा है ?'

दशरथ कुछ न बोला···वह आँखें फाड़े औरत को देखे जा रहा था···औरत ने भर्राई हुई आवाज में कहा—

'यह तुम्हारे सुहाग की निशानी है दशरथ—तुम मेरा सुहाग हो···मेरे देवता हो ।'

'नहीं—।'

दशरथ हड़बड़ा कर उठ कर पीछे हट गया और डरी हुई दृष्टि से औरत की ओर देखने लगा । औरत ने आँसुओं भरी आँखों से भर्राई हुई आवाज में कहा—

'हाँ दशरथ, भगवान् जानता है तुम मेरा सुहाग हो···मैं तुम्हारी अर्धांगिनी हूं दशरथ···मैं तुम्हारी रचना हूं—'

'···र···र···रचना···!!'

'हाँ दशरथ रचना···इस कोठी की मालिक रचना···इस कोठी का नाम 'रचना सदन' है ना···यह मेरे नाम पर है ।'

'म—म—मगर—म—म—मैं ।''

'तुम्हें कुछ भी याद नहीं दशरथ ? क्या सचमुच तुम सब कुछ भूल चुके हो ?'

दशरथ ने विवशता से हाँ में गर्दन हिला दी—रचना की आँखें फिर भीग गईं—उसने भर्राई हुई आवाज में कहा—

मैंने पूरे चालीस बरस तक तुम्हारी राह देखी है दशरथ लेकिन तुम्हें कुछ भी याद नहीं ?'

दशरथ यूं बौखलाया हुआ खड़ा था जैसे सचमुच उससे कोई बड़ा अपराध हो गया हो । रचना ने रुक कर सिसकी ली और फिर बोली—

'याद करो···आज से ठीक चालीस बरस पहले इस कोठी में बाहर के कम्पाउंड में मेरे और तुम्हारे फेरे हुए थे···और फिर···फिर इसी कमरे में जहाँ इस समय मैं और तुम हैं···मैंने एक दुल्हन के रूप में तुम्हारी प्रतीक्षा की थी ।'

रचना की आवाज फिर भारी हो गई···कुछ क्षण ठहर कर वह बोली—

'आज पूरे चालीस बरस से यह कोठी केवल तुम्हारे लिए खाली पड़ी हुई है—केवल तुम्हारे आने की प्रतीक्षा में—इस कोठी में मैंने किसी और को बसने नहीं दिया क्योंकि—क्योंकि मैं जानती थी—एक दिन तुम यहाँ जरूर आओगे—यह मेरी ही तपस्या का फल है कि भगवान् ने तुम्हें दूसरा जन्म देकर पृथ्वी पर भेजा—भगवान् ने तुम्हें यहाँ मेरे लिए भेजा है—केवल मेरे लिए ।'

दशरथ का बदन थरथर काँप रहा था···जबान सूख कर तालू से जा लगी थी । उसने थूक निगल कर गले को गीला करने का प्रयत्न किया किन्तु असफल रहा···रचना की आवाज फिर उभरी···

'तुमने यह पुनर्जन्म मेरे और केवल मेरे लिए लिया है···मैं तुम्हें सब कुछ याद दिलाऊंगी···तुम्हारा वह पिछला जन्म जब मैं तुम्हारी अर्धांगिनी बनी थी—आओ—मैं तुम्हें वह सब-कुछ याद दिलाती हूं—वह सब कुछ जो मुझ पर बीता था—वह सब कुछ जो तुम पर बीता था···क्योंकि मैं एक आत्मा हूं···आत्माओं से कुछ छिपा नहीं रहता···आत्माओं पर सब-कुछ उजागर होता है—।'

रचना ने कुछ क्षण रुककर एक लम्बी साँस ली और धीरे से उदास स्वर में बोली—

'यह बात आज से चालीस बरस पहले की है जब मैं कालिज की एक शोख चंचल लड़की थी···एक तितली की तरह चंचल—मैं अपने पिता ठाकुर रघवर प्रसाद की इकलौती बेटी थी···पिताजी मेरी एक आवाज पर लाखों रुपये लुटा देते थे···वह मुझे बहुत प्यार करते थे···उनके लिए सब कुछ मैं ही थी—मेरी मां मुझे बचपन में ही छोड़कर स्वर्ग सिधार गई थीं···पिताजी ने इस कारण दूसरी शादी नहीं की थी कि वह मुझ पर सौतेली मां की छाया नहीं पड़ने देना चाहते थे—उन्होंने मुझे बाप के साथ ही मां का प्यार भी दिया था···लेकिन मैं अपने पिता के लाड़-प्यार से बिगड़ी नहीं थी भगवान ने आरम्भ ही से मुझे—एक सुलझा हुआ मन दिया ।'

और फिर एक दिन की बात है कि कालिज में वार्षिक उत्सव था···स्टेज पर एक ड्रामा होना था जिसकी मैं हीरोइन थी···मैं सति अनुसूया का पात्र निभा रही थी जो यमराज से लड़कर अपने पति के प्राण वापस ले लेती है···जिसकी भक्ति और तपस्या भगवान को अपना निर्णय बदलने पर विवश कर देती है ।'

रचना ने क्षण-भर रुककर दशरथ की ओर देखा जो विस्मयपूर्वक रचना की आत्मा की ओर देख रहा था—फिर वह बोली—

'जानते हो उस ड्रामे का हीरो कौन था ?'

'क—क—कौन ?'

'उस ड्रामे के हीरो तुम थे ।'

'नहीं···!!'

दशरथ और हड़बड़ा गया। रचना की आत्मा कहने लगी—

'हां दशरथ···उस ड्रामा के अभिनेता तुम ही थे—मैं तुम्हारे जीवन के लिए यमराज से लड़ रही थी और मुझे ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे सचमुच मैं अपने पति का जीवन यमराज से मांग रही हूं।'

बोलते-बोलते रचना की आवाज जैसे आकाशवाणी होती चली गई···दशरथ को ऐसे लगने लगा मानो वह सब कुछ उस पर बीत रहा हो—उसकी आँखों के सामने पूरा दृश्य घूम गया···चालीस बरस पहले का उसके किसी पूर्व जन्म का दृश्य।

दशरथ स्टेज पर रचना के पति के रूप में चित पड़ा था···यमराज उसके प्राण निकाल चुके थे···और अनुसूया यमराज का रास्ते रोके गिड़गिड़ा रही थी—

'नहीं नहीं यमराज···यह नहीं हो सकता···आप मेरे पति के प्राण नहीं ले सकते।'

'देवी—' यमराज की भारी आवाज गूंजी, 'हम अपनी इच्छा से यह कार्य नहीं कर रहे···हमारा इसमें कोई लाभ नहीं···यह तो भगवान् का आदेश है जिसे हम पूरा कर रहे हैं···तुम्हारे पति की भाग्य-रेखाओं में बस इतनी ही सांसें थीं।'

'नहीं-नहीं यमराज जी···यह भगवान् का आदेश हो या कुछ भी हो···लेकिन मैं अपने सुहाग के लिए आपका पथ रोके खड़ी रहूंगी।'

'देवी! हठ न करो···भगवान् के आदेश को कभी कोई नहीं बदल सका।'

'लेकिन एक पत्नी की पुकार ब्रह्माण्ड को हिला कर रख देगी···' रचना ने कहा, 'जरा देखिए इन कलाइयों को जिनमें हरे काँच की चूड़ियां सजाई गई हैं···क्या आप इन्हें सूना कर देंगे? मेरे माथे की बिंदिया मिटा देंगे? मेरी मांग का सिन्दूर उजाड़ देंगे—? अगर ऐसा हुआ तो मैं रोते-रोते इस धरती को सागर बना दूंगी···अपने विश्वासों से आकाश को छलनी कर दूंगी—आप मेरे पति के प्राण नहीं ले जा सकते यमराज आप मेरे पति के प्राण नहीं ले जा सकते···।'

कहते-कहते रचना ने यमराज के पैर पकड़ लिए···उसकी सिसकियां भरी पुकार से पूरा हाल गूंज उठा था···इतने भावनापूर्ण सफल अभिनय पर तालियों का शोर गूंज उठा था···काफी देर तक तालियां गूंजती रहीं। यमराज ने अनुसूया के पति के प्राण लौटा दिए थे इसलिए कि उसकी पुकार से ब्रह्माण्ड कांप उठा था···विष्णु देव का सिंहासन डोल गया और भगवान् को अपना निर्णय बदलने पर विवश होना पड़ा···तालियों की गूंज में दशरथ फिर जीकर खड़ा हो गया···रचना ने उसके पांव छू लिए और दशरथ ने रचना को सीने से लगा लिया—रचना दशरथ के सीने से लगी थर-थर कांप रही थी—उसकी आँखें बन्द थीं—पर्दा गिर चुका था लेकिन रचना अभी तक दशरथ के सीने से ही लगी हुई थी—

अचानक दशरथ ने रचना को अपने सीने से अलग करते हुए कहा—

'र रचना! होश में आओ···ड्रामा समाप्त हो चुका।'



रचना हड़बड़ा गई···एकाएक उसे यूं लगा जैसे वह किसी गहरे सपने से जाग उठी हो···उसने विचित्र दृष्टि से दशरथ को देखा। दशरथ बौखला कर जल्दी से पलट कर स्टेज से बाहर निकल गया···रचना को सब कुछ अनोखा और खाली-खाली-सा लगने लगा।

थोड़ी देर बाद जब वह 'ग्रीन-रूम' में पहुंची तो उसकी साथी लड़कियों ने उसे घेरे में ले लिया और प्रशंसा की बौछार आरम्भ कर दी।

'वाह रचना! तुमने तो कमाल कर दिया।'

'इतनी भावनापूर्ण नैचुरल एक्टिंग शायद अब तक कालिज के इतिहास में किसी ने नहीं की होगी।'

'लगता ही नहीं था कि तू एक्टिंग कर रही है।'

'बिल्कुल ऐसे लगता था कि तू सचमुच अनुसूया है और अपने पति के लिए वास्तविकता में यमराज से झगड़ रही है।'

'अरे! कितना दर्द था तेरी आवाज में।'

'कितनी सचाई थी तेरे स्वर में।'

रचना किसी की बात का उत्तर नहीं दे सकी—वह बिल्कुल गुमसुम चुपचाप बैठी अपना मेकअप उतारती रही थी—फिर जब लड़कियां चली गईं तो केवल रूपा उसके कमरे में रह गई जो एक कोने में चुपचाप खड़ी थी और उसकी आँखों में आँसू तैर रहे थे। रचना रूपा की ओर मुड़ी और चौंक कर बोली—

'अरे रूपा! तू यहाँ चुपचाप खड़ी है?'

'रचना···!!'

रूपा बढ़ कर रचना से लिपट गई और अनायास सिसक पड़ी। रचना घबरा कर बोली—

'अरे अरे···यह क्या करती है? क्या हो गया तुझे?'

'रचना!'

रूपा की सिसकियां और तेज हो गईं तो रचना ने बौखलाकर कहा—

भगवान् के लिए कुछ बता तो सही···जीजा जी कैसे हैं? सब कुशल तो हैं घर में?'

(शेष पृष्ठ ३९ पर)


टेबल पर से ये मूंगफली के छिलके ग्रौर ग्राइसक्रीम के खाली कप उठा कर रद्दी की टोकरी में डाल दीजिये एक ग्राहक ग्राया है. वह यह सब देखेगा तो उस पर क्या इम्प्रेशन पड़ेगा?
मिस रूबी, ये मूंगफली के छिलके ग्रौर ग्राइसक्रीम के कप तो ए-वन जासूस कम्पनी के ट्रेड मार्क हैं।
तो इस ट्रेड मार्क को हटा लो।
ग्रापसे मिलिये. ग्राप हैं वम्वई के मशहूर ग्रार्ट ग्रौर एंटीक डीलर घनश्याम जी महेश जी झवेरी। ग्रापकी वम्बई में बहुत बड़ी इंटरनैशनल ख्याति प्राप्त ग्रार्ट ऐजेंसी है। एक बहुत जरूरी केस के सिलसिले में ये हमारी सहायता चाहते हैं।
मेरा नाम घनश्याम जी महेश जी झवेरी है न कि राधेश्याम जी जलेबी।
ग्रापसे मिल कर वहुत खुशी हुयी राधेश्याम जी सुरेश जी जलेवी। तशरीफ रखिये. कहिये हम ग्रापकी क्या सेवा कर सकते हैं?
इनका मतलब वही था।
हाथ मिलाने की झोंक में सिलविल हाथ तेजी से बढ़ाता है तो सामने वाली कुर्सी से हाथ टकरा जाता है ग्रौर कुर्सी पलट जाती है।
ऐह
कुर्सी तो तने गिरा दी चीफ डिटेक्टिव साहब! ये तशरीफ की टोकरी किस पर रखेंगे?
TUMBLE!
ग्रोह, ग्राई एम सॉरी सर! मैं ग्रभी उठा देता हूँ यह कुर्सी। ग्राजकल ऐसी घटिया कुर्सियां वन रही हैं बस।
पहले ग्राप झवेरी साहब से हाथ तो मिला लीजिए ये कब से हाथ बढ़ाये खड़े हैं।
पहले जरा यह कुर्सी तो उठा लूं।
तब तक मैं ही हाथ मिला लेता हूं।


झवेरी साहब, आप भी फॉरेन कंट्री गये होंगे वहां कितनी अच्छी एडमिनिस्ट्रेशन है। इस मुल्क में तो एडमिनिस्ट्रेशन है ही नहीं। कभी ... कभी राशन नहीं और कभी बिजली नहीं अब देखिए अभी-अभी बिजली चली गई। पब्लिक को कितनी तकलीफ होती है। अंधेरा हो गया, पंखे, एयरकंडीशनर बंद हो गये। ऐसे में काम होगा तो क्या होगा? और गर्मी कितनी तेज पड़ रही है?
बिजली कहां गई है? आप कुर्सी उठा रहे थे तो उस वक्त आपका हैट खिसक कर आंखों पर आ गया। इसीलिये अंधेरा नजर आ रहा है।
मैं गलत जगह तो नहीं आ गया हूं। क्या यही ए-वन जासूस कम्पनी है जिसका नाम मुझे दिया गया है?
झावेरी साहब, आप गलत जगह पर नहीं आये हैं। यह दोनों तो केस के शुरू में हमेशा प्रोग्राम पेश करते हैं। आप बेफिक्र होकर अपना मामला बताइये।
अच्छा तो चलो, सुनो।
मैं अपने साथ जो चार तोते लाया हूं उनका मेरी कहानी से गहरा सम्बंध है। यह तो आपको पहले ही बता चुका हूं कि बम्बई में मेरी आर्ट-पेन्टिंग व एन्टीक्स की बहुत बड़ी दुकान है। मेरे दुकान में कई कर्मचारी काम करते हैं। तीन वर्ष पहले जब नकली पेन्टिंग का बाजार गर्म था तो मैंने एक पेन्टिंग विशेषज्ञ नौकरी पर रखा सचमुच ही संसार के पुराने चित्रकारों की कलाकृतियों की अनोखी पहचान थी। मेरी दुकान में एक चित्र पड़ा था, चित्र में एक डाल पर दो तोते
बैठे दिखाये गये थे। उस चित्र को देख उस विशेषज्ञ (जिसका नाम मथुरादास मीर चंदानी था) ने कहा कि तोतों वाला सीन नकली है उस पेन्टिंग के नीचे दूसरी असली बहुमूल्य पेन्टिंग छिपी है। जैसे कि आमतौर पर लोग महंगी पेन्टिंग को छिपाने के लिए उसी पर दूसरी पेन्टिंग कर देते हैं। ऊपर वाली पेन्टिंग की तह सावधानी से हटाने पर नीचे की असली पेन्टिंग ज्यों की त्यों निकल आता है। मैंने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया।
एक दिन मीर चंदानी मुझे बताये बगैर वह चित्र घर ले गया और घर पर ही ऊपर वाली पेन्टिंग उतार कर नीचे की असली पेन्टिंग लेकर आ गया। सचमुच ही उस असली पेन्टिंगको देखकर मैं दंग रह गया। वह एक दुर्लभ प्राचीन कलाकृति थी जिसका मुझे आसानी से दो लाख रुपया मिल सकता था। यहीं से हमारे मतभेद शुरू हुये। मीरचंदानी उस पेन्टिंग में मुझसे आधा हिस्सा
मांगने लगा। उसका दावा था कि उस कलाकृति को खोज उसी ने की थी, वरना वह पेन्टिंग पन्द्रह-बीस रुपये में बिक जाती। काफी हद तक उसका कहना सही था परन्तु मैं भी उस समय लालच में आ गया था। मैंने देने से साफ इंकार कर दिया। मेरा कहना था कि वह पेन्टिंग चूंकि दुकान की सम्पत्ति थी। अतः नीचे कुछ भी
निकला हो वह दुकान की ही सम्पत्ति होगी। उसने गुस्से में आकर नौकरी छोड़ दी और मुझसे बदले के रूप में वह पेन्टिंग भी साथ लेता गया।
तीन वर्ष तक उसका कोई पता नहीं लगा। मैंने पुलिस में रिपोर्ट लिखा रखी थी, सारे भारत की पुलिस सतर्क थी कहीं भी उस पेन्टिंग को बेचने की कोशिश करता वह पकड़ा जाता। सभी आर्ट गैलरियों और कला विक्रेताओं को वार्निंग दी जा चुकी थी। मीरचंदानी को भी इस बात का पता था, उसने उस पेन्टिंग को बेचने की कोशिश तक नहीं की। मरने से कुछ दिन पहले उसने मुझे पत्र लिखा वह दो वर्ष से दिल्ली में एक कुम्हार के घर रहता आया था। वह मेरे लिये सात तोते छोड़ गया। तोतों के बड़े अजीब-अजीब नाम हैं।
हर तोता कुछ न कुछ बो
है। तोते जो कुछ
उसमें पहेलियें
में मेरे
जिनकी
वह पे सकती
है ओं और
गहरा
मरते मेरे
तोतों के रूप
में एक गया।


अगर तोतों के बोलों में छिपे संकेतों को ठीक समझ कर कोड हल कर लेता हूँ तो उस पेन्टिंग को पाने का मुझे उपाय मिल जाता है। इधर एक गड़बड़ और हो गयी। मीरचन्दानी जिस कुम्हार के पास रहा उसने उसकी काफी सेवा की थी। मरते-मरते कुम्हार को वह उसकी सेवाओं का पुरस्कार देना चाहता था। उसने कुम्हार को कहा कि एक साहब आकर उन तोतों को दस हजार रुपये देकर लेंगे। मैं खुशी-खुशी उन तोतों के उसको दस हजार दे देता लेकिन मै विदेशों के टूर पर था।
वापिस आकर जैसे ही उसका पत्र पढ़ा मैं दिल्ली दौड़ा। यह क्या देखता हूं कि कुम्हार १५ दिन मेरी इन्तजार करता रहा फिर उसनें दस हजार वाली बात मीरचन्दानी का मजाक समझ कर वे तोते बेच दिये। जहां-जहां उसने बेचे थे वहां जाकर ढूंढ़-ढूंढ़ कर चार तोते लाया। जिन्होंने तोते खरीदे थे वे बड़ी मुश्किल से देने को तैयार हुए। दो ने देने से साफ इन्कार कर दिया तो मुझे चोरी करनी पड़ी। तीन तोतों का पता ही नहीं लगता. कुम्हार को भी याद नहीं है कि किस गली में बेचे थे वे।
यह जो चार तोते मिले हैं वे जो कहते हैं सुन लो।
छुन-छुन-छू–छुन-छुन-छू की बकरियां गुम हो गयी हैं, पता नहीं उसे कि कहां ढूंढ़े। इन्स्पेक्टर ईगल से मिलो।
दास कबीर–धो-धो धोबी का कुत्ता। न घर का न घाट का।
अर्जुन–मैंने तीर छोड़ा. वह सौ गज पश्चिम की ओर जा गिरा।
कैप्टन किशोर–हड्डियों से आगे पत्थरों के नीचे बिन ताले के बक्से की तलाश करो।
अजीब बात है कि दास कबीर तोता हकला कर बोलता है। धो-धो धोबी का कुत्ता. न घर का न घाट का।
बाकी तीन तोतों का पता ही नहीं लगता मेरा सिर चकरा रहा है। बाकी तीन तोते जो हैं उनके नाम भी इसी प्रकार के ऊटपटांग हैं। कालिया. इन्सपेक्टर ईगल और फट मुँहा। आपकी समझ में कुछ आया? जब तक बाकी के तीन तोते नहीं मिलते तब तक पहेली की कड़ियां भी पूरी नहीं होतीं। मैं बहुत परेशानी में हूं।
मैं खुद मीर चंदानी के बारे में उस कुम्हार से बात करना चाहती हूं।
चलिये. लेकिन आपको एक बात बता दूं कि शायद आप उससे बात नहीं कर पायेंगी क्योंकि वह आजकल बीमार पड़ा है। उसका लड़का है जो सारा काम सम्भालता है। वह शायद ही कुछ बता सके।
साहब जी आप बोत मौके से आये। यह तोता कालिया वापिस मिल गया है। जिस मेम साहब को यह बेचा था वह बोत गुस्से में आई. कहने लगीं उनका भाई पक्षियों के बारे में जानता है। उसने बताया कि यह तोता नहीं है. यह तो मैना है। कहने लगीं कि तुमने हमें ठगा है. मैंने उनकी दी कीमत लौटा दी। आपको चाहिए न यह?
चाहिये. चाहिये. चाहिये।
बेटा चिन्ता न करो, अगर मेरा काम बन गया तो कालिया के मैं तुम्हें एक हजार रुपये दूंगा। बाकी के दो भी पैदा करो।
साहब जी. कालिया बहुत पुराना तोता है। जब मीरचंदानी साहब हमारे पास आये थे तभी से था यह उनके साथ मरने से पहले जब वह छः नये तोते लाकर उनको सिखाया करते थे। तब भी यह उनके कंधे पर ही बैठा रहता था। बड़ा तेज है साहब यह कालिया
हूंह



अगले सप्ताह तोतों के कोड का रहस्य।

दीवाना अंक २२ प्राप्त हुआ, पढ़कर दिल इतना खुश हुआ। जैसे लाखों रुपयों का खजाना मिल गया। काका के कारतूस, चिल्ली लीला-२२७, पढ़ कर दिल बहुत प्रसन्न हुआ। सिलबिल-पिलपिल पढ़कर मन खुश नहीं हुआ और बन्द करो बकवास, मोटू-पतलू में डाकू झांजर सिंह की कहानी बहुत अच्छी लगी और कई बार पढ़ी। बेटा झमूरे में भलाई का काम और पंचतन्त्र, टूटते जुड़ते फेरे और सवाल यह है आदि सभी स्तंभों ने भरपूर मनोरंजन किया। आप से मैं एक विनती करूंगा की आप फेंटम और डियाना की नौकरी को और बढ़ा कर दिया जाए। पढ़ने के लिए मन बहुत करता है। **सुरेश चन्द्र अरोड़ा—मेरठ**

दीवाना के अंक १८ में मुख पृष्ठ पर जब मैंने सर्कसमैन मि. चिल्लीराम को उल्टा लटकते देखा तो ऐसा महसूस हुआ कि मि. चिल्ली ही प्रत्येक कार्य में चेम्पीयन का मैडल जीतता होगा। और मेरे मिट्टी के शेरों (मोटू-पतलू) ने भी क्या कमाल कर दिखाया है! इतनी बड़ी गेंग को अपने मूर्खतापन से पुलिस के हवाले करवा दिया। मुझे भी इनके हमदर्द (घसीटाराम) पर बहुत तरस आता है! यदि घसीटे को पहाड़ों से गिरने में इतना ही आनन्द आता है तो मैं घसीटाराम को पहाड़ से २० बार फेंकने के लिये तैयार हूं। पिलपिल-सिलबिल, फैन्टम, परोपकारी व चिल्ली लीला पसन्द आई।

दिनेश मटाई राणा—इन्दौर

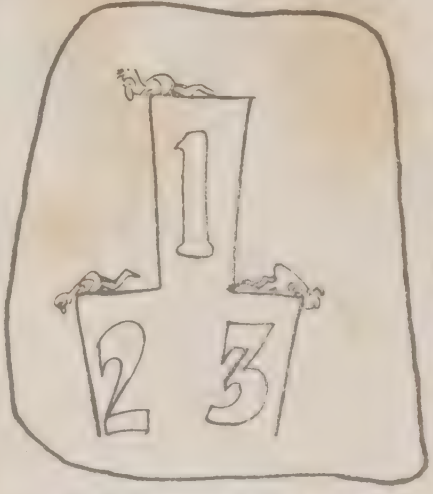
मैंने जैसे ही दुकान खोली, अखबार के साथ दीवाना का अंक १६ पाया। पाकर खुशी तो हुई लेकिन एक दुख जरूर था ये दुख यह है कि दीवाना का अंक १६ पूरे १६ दिन लेट आया। मुख पृष्ठ अति सुन्दर लगा। चिल्ली साहब ने पंडित का रूप ले रखा था। पढ़ने को बहुत अच्छी सामग्री मिली। सभी एक से बढ़ कर एक थे। सभी अंक रोचक लगे। **किशोर—रिवाड़ी**

"दीवाना" को चाहने वाले केवल भारत में ही नहीं बल्कि नेपाल में भी बहुत से लोग हैं। उन लोगों में से एक मैं भी हूं! अभी हाल में ही दीवाना अंक १६ पढ़ने को मिला जिसमें "मोनिका" उपन्यास का ९ वां

आपके पत्र

भाग पढ़ने को मिला, साथ ही "गंगा की सौगन्ध" की पैरोडी पढ़ने को मिली। मोटू-पतलू ने जो ट्रेन से खजाना लूटा वो भी मजेदार था। इस पत्रिका के सभी कार्यक्रम जैसे "खेल खेल में", "आपस की बातें", बन्द करो बकवास', मदहोश होश में आ आदि बहुत अच्छे लगते हैं। में ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूं कि "दीवाना" हमेशा उन्नति करे! **कुर्बान हवारी—नेपाल**

दीवाना अंक १९ पढ़ा बहुत ही दिलचस्प लगा। "दीवाना" बहुत ही लोकप्रिय बनता जा रहा है। मोटू-पतलू, पिलपिल-सिलबिल, इसके साथ ही "आधारिन आधी-राख, बहुत ही रोचक थे। "दीवाना" पत्रिका में कोई नई प्रतियोगिता शामिल करने का कष्ट करें। **कृष्ण कपूर—दिल्ली-३५**



'दीवाना' का नया अंक प्राप्त हुआ बड़ा मजा आया। ऐसा लगता है इस पत्रिका के कलाकार कभी किसी को रूलाना ही नहीं जानते। सिर्फ हँसते-हँसाते ही पेट फुला देते हैं। 'मोनिका' धारावाहिक उपन्यास भाग ११ रोचक लगा। डाक्टर झटका को नमस्कार। **ओम पुरी—कतरासगढ़**

[illegible] कीसवां अंक पढ़ कर [illegible] कि दुनिया भर की हंसी 'दीवाना' में ही है।

इस अंक में सबसे मजेदार 'चिल्ली जेब कतरा कम्पनी' रहा। आशा है, भविष्य में भी ऐसी सामग्री मिलती रहेगी। मुझे दीवाना से एक शिकायत है वो यह कि 'दीवाना' तो हास्य पत्रिका है फिर 'मोटू-पतलू' इसमें आप जासूसी क्यों देते हैं। अगले अंक की प्रतीक्षा में। **अजय कुमार गुप्ता—तपकरा**

मैं बिल्कुल नया पाठक हूं 'दीवाना साप्ताहिक' का। पहली ही बार 'दीवाना' अंक २० के रूप में पढ़ा और इस अंक के 'सवाल यह है', 'पिलपिल-सिलबिल' और अकबर बीरबल सम्बन्धी किस्सों की रोचकता और मनोरंजकता ने मुझे इतना अधिक प्रभावित किया कि मैं पहली ही बार दीवाना पढ़ कर उसकी प्रशंसा के दो शब्द लिखे बिना नहीं रह सका। अन्य स्तंभ मनोरंजक होने के साथ ही साथ ज्ञानवर्द्धक भी लगे।

राकेश कुमार सिक्का—सहारनपुर

मैं करीब दो वर्षों से लगातार दीवाना पढ़ रही हूं और दीवाना में काफी परिवर्तन हुए हैं। फिर भी सिर्फ एक रुपये में ४४ पृष्ठों की पत्रिका दीवाना जिसमें खेल, मनोरंजन, फिल्मों से सबंधित स्तम्भ तथा अन्य प्रकार के ज्ञान संबंधी स्तंभ भी हैं।

दीवाना का अंक २३ पढ़ कर दिल खुश हो गया। मुख पृष्ठ पर चिल्ली को देख कर तो मैं काफी देर तक अपनी हंसी रोक नहीं पाई। इसमें मुझे शतरंज के खंडारी (फिलम पैरोडी), सिलबिल-पिलपिल, मोटू-पतलू तथा फैण्टम और डियाना की नौकरी स्तंभों ने काफी आकर्षित किया। वैसे परोपकारी का भी जबाब नहीं था। आप कृपया मदहोश बन्द कर दें और उसकी जगह चाचा चौधरी शुरू कर दें तो दीवाना को चार चांद लग जायेंगे। २३वें अंक में बन्द करो बकवास पुराना छप गया है यह देख कर काफी दुःख हुआ क्योंकि हमारा एक अन्य 'बन्द करो बकवास' स्तंभ रह गया। आपसे निवेदन है कि अगर आप मोटू-पतलू आदि के स्टीकर छापते हों तो नीचे लिखे पते पर भेज दें या ये बता दें कहाँ से मिलेंगे ताकि हम उन्हें खरीद सकें। **रेनू ठकराल—नई दिल्ली**

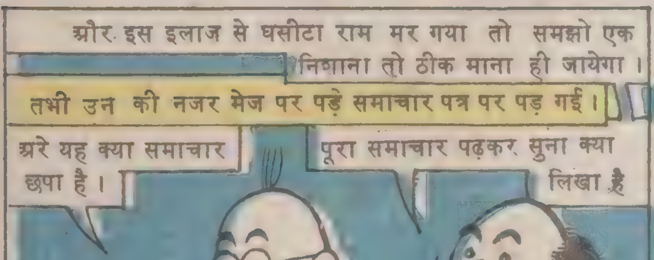
स्टीकर हमने नहीं छापे हैं इसलिये नहीं मिल सकते। —सं०

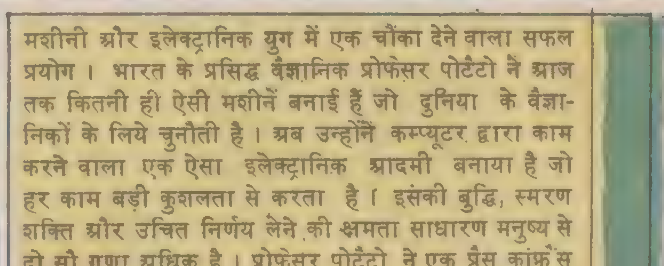
मोटू-पतलू और कम्प्यूटर मानव

● पिछले दिनों डाक्टर झटका और उनके कम्पाउन्डर नैनसुख ने एक ऐसी दवा बनाकर घसीटा राम को पिला दी थी जिससे उसने किसी भी बात का विरोध करना छोड़ दिया है । इसके बाद घसीटा राम ने जनता पार्टी के विरोधी नेताओं को मिलकर बैठने और अपने साथियों का विरोध न करने की सलाह दी थी । तो अपने अधिकारों को लुटता देखकर नेताओं ने घसीटा राम की इतनी पिटाई की थी कि उनके अंजर पंजर ढीले हो गये थे ।

अब डा० झटका ने घसीटा राम के टूटे फूटे हाथ पांव तो जोड़ दिये हैं । पर उनकी विरोध न करने की आदत ज्यों की त्यों बनी हुई है और डा० झटका इस मुसीबत को दूर करने के लिये कोई नई दवा बनाने की खोज में लगे हुए हैं ।









कम्प्यूटर मानव" "भगवान के कारखाने में बनने वाले असली मानव को जीवन के हर क्षेत्र में पछाड़ देगा। उनका बनाया कम्प्यूटर मानव ईमानदार है, लगन का पक्का है, मेहनती है, यह भाई भतीजा वाद में विश्वास नहीं रखता। और न मंत्री पद के लालच में बेचा या खरीदा जा सकता है।
प्रोफेसर पोटेंटो का विचार है कि भविष्य में उनके बनाये कम्प्यूटर मानव सरकार चलाने और देश की सेवा करने में भगवान के बनाये नेताओं से अधिक प्रतिभाशाली सिद्ध होंगे।
चलो प्रोफेसर पोटेंटो के पास चलकर देखें
...उसने कैसा कम्प्यूटर मानव बनाया है।
प्रोफेसर से कहेंगे वह अपना एक कम्प्यूटर मानव हमें कुछ दिन के लिये उधार दे दे।
मोटू-पतलू प्रोफेसर पोटेंटो से मिले तो उसकी योग्यता से प्रभावित हुए बिना न रह सके।
जरा सोचकर देखो आज के युग में विज्ञान ने मनुष्य को कहां से कहां पहुंचा दिया है। तीन चार सौ साल पहले हम बैलगाड़ी या ऊंटगाड़ी से आगे की बात सोच भी नहीं सकते थे। और इस बात पर कोई सपने में भी विश्वास नहीं कर सकता था कि एक दिन इंसान चांद पर चर्खा कातने वाली बुढ़िया के पास जाकर खड़ा हो जाएगा। हमारे दैनिक जीवन को विज्ञान ने कितना सुखी बना दिया। ऊंची से ऊंची बिल्डिंग पर हमें लिफ्ट सैकिण्डों में पहुंचा देती है। टेलिफोन, टेलीविजन रैफ्रीजेटर, आटोमेटिक कुकर, हीटर,
ऐयर कंडीशनर, इलैक्ट्रिक रेजर, वाशिंग मशीन, इलैक्ट्रिक कुकर, पंखे, गीजर, ट्यूब लाईट्स, कैमरा, ट्रांजिस्टर, टेप रिकार्डर, पिक्चर रिकार्डर, स्कूटर, मोटर और ऐसी कितनी ही छोटी मोटी मशीनें बन गई हैं जिन्हें उपयोग में लाकर हम अधिक से अधिक लाभ उठाते हैं और अब कम्प्यूटर बनने के बाद तो हमारी सैंकड़ों मुश्किलें आसान हो गई हैं। सच पूछो तो आज ऐसा कौन-सा काम है जो आटोमैटिक मशीनों द्वारा नहीं होता।



हैं—! किसी के थप्पड़ मारना हो तो वह आज भी अपने हाथ ही से मारना पड़ता है।
जी नहीं। इसके लिए आटोमैटिक मुक्के का आविष्कार मैं बहुत पहले कर चुका हूं। गाईडिड मेजाईल की तरह यह सीधा मुंह पर पड़ता है।
ऐसे ही मैंने बहुत से आविष्कार किये हैं। इनमें यह एक 'आटोमैटिक बाथ वाशर प्रैस' है।
इसका बटन दबा दो तो तुम्हारी ड्राइक्लीनिंग हो जाएगी शेव बन जाएगी, हेयर कटिंग हो जाएगी। बूट पालिश हो जाएंगे। और कपड़े आटोमैटिक ड्राईक्लीन हो कर जिस्म पर पहने-पहने ही प्रैस हो जाएंगे।
यह 'आटोमैटिक खुजली रिमूवर' है। जिस्म पर जहां खुजली हो रही हो उस जगह का नाम लिखकर इसके पंच कार्ड को मशीन के कम्प्यूटर में डाल दीजिये। इस मशीन में से हाथ निकलेंगे और खुजली के स्थान पर पहुंचकर खुजली मिटा देंगे।
यह आटोमैटिक 'गाली गलोच यंत्र' है। यह यंत्र अगर आप के पास है तो किसी को बुरा भला कहने के लिये आपको किसी और की जरूरत नहीं।
और इन सब से परे हटकर मेरा सबसे बड़ा आविष्कार है यह कम्प्यूटर मानव। यह कभी समाप्त न होने वाली 'सोलर बैटियों' की शक्ति से चलता है।


इसके सीने में लगा कम्प्यूटर हमारी आवाज की ध्वनि के आदेश को इसके दिमाग तक पहुंचाता है । फिर यह आदेश का मतलब समझ कर हमारी आज्ञा का पालन करता है । 'सालिड स्टेट सर्कट' में ऐसे ट्रांजिस्टर लगे हैं, जो न कभी खराब होते हैं और न कभी काम बंद करते हैं इसकी बैटरियां सूर्य के प्रकाश से खुद-ब-खुद चार्ज होती रहती हैं । दूसरे शब्दों में यूँ कहा कि भगवान का बनाया हुआ आदमी लाख कोशिश करने पर कभी भूल कर ही बैठता है । वह बूढ़ा होता है, बीमार होता है, काम से लाचार होता है और अंत में मर जाता है ।
पर मेरा कम्प्यूटर मानव कभी भूल नहीं करता, कभी काम से नहीं थकता, कभी बूढ़ा या बीमार नहीं होता कभी काम बन्द नहीं करता और कभी नहीं मरता ।
यह कभी नहीं मरता ! मतलब है, एक बार पैदा हो गया सो हो गया ?
हां, एक बार बन गया तो बन गया । देखो मैंने यह बटन दबाकर इसे चालू कर दिया है
अब इस का कम्प्यूटर और वायरलैस सिस्टम लाखों करोड़ों और अरबों साल तक चालू ही रहेगा ।
टुईकल टुईकल । हमारे मेहमानों के लिए कुछ नाश्ता लाओ ।
अभी लाया सर ।
इसका नाम टुईकल टुईकल है ।
फिर तो ठीक ही कहा है किसी ने 'टुईकल टुईकल लिटिल स्टार । हाऊ आई वंडर वट यू आर ।'


खते ही देखते टुईंकल टुईंकल
फ्रीजेटर से नाश्ते की
लेटें ले आया ।
तुम बड़े आज्ञाकारी हो टुईंकल ।
थक्यू वैरी मच
मोटू अंकल
मेहमानों को खुश करने के लिए कोई गाना सुनाओ टुईंकल
ता मंगेशकर की आवाज में मेरा गाया हुआ एक गाना
निये । फरमाईश करने वाले हैं। दिल्ली से मोटू-पतलू,
फेसर पोटेटो चिप्स और उनके साथी ।
प्रोफेसर साहब, क्या आप टुईंकल टुईंकल को कुछ दिनों के
लिए हमें उधार दे सकते हैं ।
हम यह देखना चाहते हैं कि दैनिक जीवन में यह कितनी
महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है ।
हां हां, तुम ले जाओ इसे ।
गरी नगरी द्वारे द्वारे ढूंढू रे सांवरिया,
िया पीया रटके मैं तो हो गई रे बावरिया
गरी नगरी द्वारे द्वारे ढूंढू रे सांवरिया ।
वाह मेरी
लोहे की जोगन ।
जवाब नहीं
तेरा भी ।



मैं खुद इसे कुछ समझदार ग्रौर विश्वासनीय ग्रादमियों के बीच छोड़कर इसकी कार्यकुशलता देखना चाहता था । पर इसके साथ ही तुम्हें इसकी यह 'टूल्ज फिट' ले जानी होगी, ताकि तुम इसके कलपुर्जों की देख-रेख कर सको । ग्रौर इसके साथ ही यह नोट बुक भी जिसमें टुईंकल टुईंकल के विषय में पूरी जानकारी दी गई है ।
इसमें लिखा है इसे खाने के लिए ग्रीस ग्रौर पीने के लिए मोबिल ग्रायल किस किस समय चाहिए । इसके कौन से कलपुर्जों को किस समय ग्राराम की ग्रावश्यकता होती है । इसका स्वभाव कैसा है ? गुस्सा कैसा है ? टुईंकल टुईंकल को क्या पसंद है ग्रौर क्या ना पसंद है । इसके कौन-कौन से स्विच किस काम ग्राते हैं ।
टुईंकल
इसके बारे में एक विशेष बात यह है कि जैसे यह कभी नहीं मरता, ऐसे ही यह कभी नहीं सोता । हर समय करने के लिए कोई न कोई काम चाहिए । यह ग्राम ग्रादमियों की तरह हरामखोर नहीं है । इसके लिए कोई काम न हो तो यह बहुत बुरा मानता है ।
हम इसकी हर सुविधा का ख्याल रखेंगे ।
टुईंकल टुईंकल के साथ उसकी 'टूल्ज फिट' ग्रौर नोटबुक लेकर ग्रपने घर की ग्रोर चल दिए तो चलते-चलते टुईंकल रास्ते में एक जगह रुक गया ।
मेरे लिए टैक्सी मंगवाग्रो ।
टैक्सी मंगवाग्रो ? वाह रे नवाब साहब ।
पैदल चले हैं तुम्हें टैक्सी चाहिए
तुम टैक्सी के साथ-साथ चलना । मैं कोई मना तो नहीं करता हूं । तुम्हारे पांव में कोई ऐसी गरारियां तो नहीं लगी हैं जो पैदल चलने में घिस जाएंगी ।



अगले सप्ताह अपने इन प्रिय कलाकारों से फिर मिलिए।



आगामी अंक में आँखों के अंधे अक्ल के कच्चे और जेब के खोटे बच्चा झमूरे से फिर मिलना न भूलिये

खेल खेल में

दिनेश भटाई 'राजा'—इन्दौर

प्र० : किसने, कहाँ, कब और किसके विरुद्ध क्रिकेट में सबसे पहले शतक लगाया।

उ० : आस्ट्रेलिया के चार्ल्स बैनरमैन ने विश्व के प्रथम टैस्ट की प्रथम पारी में ही शतक मारा था—प्रथम टैस्ट मेलबार्न में १८७७ में हुआ था।

****

विकास लूथरा—रामा कृष्णा पूरम

प्र० : वालीबाल खेल का आविष्कार कौन से देश ने किया ?

उ० : अमरीका ने।

****

टीटू सिंह—पटना

प्र० : (केरी पैकर के खिलाड़ियों को छोड़कर) दुनिया में इस समय सबसे अच्छा ओपनर बल्लेबाज कौन है।

उ० : गवास्कर

****

योगेश कुमार जैन—रामपुर

प्र० : 'नो बाल' पर खिलाड़ी किन-किन परिस्थितियों में आऊट होता है तथा यदि 'नो बाल' पर खिलाड़ी चौका मार दे तो वह माना जायेगा अथवा नहीं ?

उ० : नो बाल पर रन आऊट हो सकता है, चौका मारे तो चौका माना जायेगा।

****

रोशन व्यास 'त्यागी'—इन्दौर

प्र० : विश्व में हाकी का सर्वश्रेष्ठ गोल कीपर कौन है ?

उ० : पाकिस्तान के गोल कीपर सलीम शेरवानी।

****

अजय कुमार गुप्ता—तपकरा (म. प्र.)

प्र० : क्या अब भविष्य में कभी हाकी खेल में भारत स्वर्ण पदक पा सकता है ?

उ० : असंभव तो कुछ भी नहीं है। केवल जरूरत इस बात की है कि हाकी से राजनीति को उखाड़ फेंका जाए और फिर सच्ची लगन से अभ्यास किया जाये।

****

सैय्यद अरशद जहीर—अजमेर

वालीबाल के खेल का आविष्कारक कौन है ?

अमरीका के विलियन जी० मार्गन ने १८६५ में वालीवाल का आविष्कार किया। वे वाई. एम. सी. ए. में फिजिकल ट्रेनिंग इन्ट्रक्टर थे।

****

प्रताप यादव—रिवाड़ी

प्र० : रगबी फुटबाल में कितने खिलाड़ी होते हैं ? यह किस देश का राष्ट्रीय खेल है ?

उ० : रगबी अमरीका (संयुक्त राज्य) का राष्ट्रीय खेल है। रगबी यूनीयन मैचों में एक टीम में १५ खिलाड़ी होते हैं और रगबी लीग मैचों में १३।

****

अल्ताफ मोहम्मद शेख—उदयपुर

प्र० : अब तक कितने भारतीय बल्लेबाजों ने टैस्ट मैच की दोनों पारियों में शतक लगाये हैं ? उन्होंने यह शतक किसके विरुद्ध जमाए हैं ?

उ० : यह श्रेय दो भारतीय क्रिकेटरों को है।

१. वी. एस. हजारे-एडलेट १९४७-४८ ११६ और १४५
२. सुनील गवास्कर-ट्रिनिडाड १९७१ १२४ और २२०

****

बाबू भाई—उदयपुर

प्र० : पार्थसारथी शर्मा ने अपने टेस्ट जीवन में कितने शतक बनाये हैं ?

उ० : एक भी नहीं।

****

कैलाश गुप्ता—तपकरा

प्र० : कबड्डी खेल का आरम्भ किसने और कब किया था ?

उ० कबड्डी भारत का प्राचीन खेल हैं। इसके विकास का श्रेय किसी एक को नहीं है—

****

अजय कुमार गुप्ता—तपकरा

प्र० विश्व ओलम्पिक खेल में क्या अमरीका भी हाकी खेल में भाग लेता है ?

उ० : नहीं

****

सुनील कुमार बरनवाल—रांची

प्र० : भारत आस्ट्र[illegible] क्रिकेट शृंखला हारने का क्या कारण है ?

उ० : मध्यक्रम के बल्लेबाजों की कमजोरी तथा हमारे दोनों ऑफ स्पिनरों प्रसन्ना व वेंकट का न चल पाना।

****

सुरेश जीवनदास—कुकरेजा

प्र० : भारतीय क्रिकेट टीम का तथा टीम के खिलाड़ियों का विश्व मंच पर क्या स्थान है।

उ० : भारत सबसे नीचे है केवल न्यूजीलैंड को छोड़कर।

****

नरेश प्रधान—पं० बंगाल

प्र० : मोहिन्दर अमरनाथ, सुरेन्द्र अमरनाथ एवं लाला अमरनाथ में क्या सम्बन्ध है।

उ० : मोहिन्दर अमरनाथ व सुरेन्द्र अमरनाथ, लाला अमरनाथ के बेटे हैं।

****

रामअवतार अग्रवाल—रायगढ़

प्र० : भारत अब किस देश से क्रिकेट खेलेगा और कब तथा कहां ?

उ० : अक्तूबर माह में भारतीय टीम पाकिस्तान के दौरे पर जायेगी।

****

अमर कुमार श्रेष्ठ 'मंजू'—फतेहपुर (नेपाल)

प्र० : जूडो, कराटे, इन दोनों ही खेलों का 'विश्व चैम्पियन' किस देश का है ? उस खिलाड़ी का नाम क्या है ?

उ० : मांट्रियल में हुए ओलम्पिक गैमों में (१९७६) जूडो में चैम्पियनशिप स्थिति निम्न प्रकार से रही थी।

ओपन वर्ग

प्रथम—हारुकी उमूरा (जापान)
द्वितीय—कथि रेगरी (ब्रिटेन)

हैवी वेट

प्रथम—सर्जेई नावीकोव (रूस)
द्वितीय—गुल्दर न्यूरेथ्योर (प० जर्मनी)
तृतीय—सुमो एंडी तथा ऐलैनं कोज (जापान अमरीका)

लाईट वेट

प्रथम—हैक्टर राडरी गुर्मज (क्यूबा)
द्वितीय—युन क्यूंग चुंग (दा कोरिया)
तृतीय—जोजेफ ट्यूनेसिफ व (हंगरी)
फैलाइस मारीयानी (इटली)

[illegible]-खेल में

दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

वालीबाल कैसे खेलें

(२) टेनिस सर्विस—बंद अथवा खुले हाथ से इस प्रकार सर्विस की जाती है जैसी टेनिस में सर्विस करने का नियम है। इसलिए इस प्रकार की सर्विस को टेनिस सर्विस कहते हैं।

(३) विंडमिल सर्विस—यह सर्विस भी बंद अथवा खुले हाथों से की जाती है। विंडमिल सर्विस का उपयोग अधिकतर उच्च स्तर के खिलाड़ी ही करते हैं। सर्विस करते समय घुटनों को मोड़ना और बाँहों को स्वतन्त्र रूप से घुमाना सर्विस को दृढ़ता प्रदान करते हैं।

विंडमिल सर्विस बड़ी प्रभावकारी सर्विस होती है। विपक्षी दल को इस सर्विस को बड़ी सावधानी से वापस करना पड़ता है।

होल्डिंग (गेंद की पकड़)

वालीबाल खेल के नियमों के अन्तर्गत गेंद कमर के ऊपर के शरीर के किसी भी भाग द्वारा खेली जा सकती है और एक ही समय में शरीर के अनेक भागों को स्पर्श कर सकती है। यदि खेल के समय कोई खिलाड़ी गेंद को छू लेता है अथवा गेंद उसे छू लेती है तो समझा जाता है, खिलाड़ी द्वारा गेंद खेली गई है।



खेल के दौरान यदि गेंद एक क्षण के लिए भी खिलाड़ी के हाथों अथवा भुजाओं पर रुक जाती है तो इसे होल्डिंग (गेंद को पकड़ना) माना जाता है।

गेंद को हथियाना, उठाना अथवा खिसकाना भी 'गेंद को पकड़ना' माना जा सकता है। परन्तु दोनों हाथों से गेंद को नीचे की ओर से मार करना उचित समझा जाता है।

यदि किसी खिलाड़ी के शरीर से गेंद लगातार दो बार छू जाती है तो समझा जाता है कि खिलाड़ी ने गेंद को लगातार दो बार खेला है। इस क्रिया को दुहरा प्रहार कहा जाता है। इसे एक नियम का उल्लंघन समझा जाता है।

सामान्य रूप से वालीबाल का खेल हाथों एवं भुजाओं से खेला जाता है।

इसी प्रकार नीची गेंद को एक या दो हाथों से सही ढंग से खेला जाता है। इस तरीके को गेंद-उत्थान कहते हैं।

समकालिक स्पर्श

खेल के समय यदि दो प्रतिद्वन्द्वी खिलाड़ी एक ही समय में गेंद को एक साथ खेलें तो जिस तरफ गेंद गिरती है, उसकी विपरीत ओर के दल द्वारा खेली गई मानी जाती है। दो प्रतिद्वन्द्वियों द्वारा गेंद को एक ही समय में स्पर्श करने पर वह दल, जिसके प्रांगण में गेंद गिरती है, गेंद को तीन बार खेलने का अधिकारी माना जाता है।

यदि समान समय के स्पर्श के पश्चात् गेंद प्रांगण सीमाओं के अन्दर आ जाती है तो वह टीम जिसके प्रांगण में गेंद गिरती है, तो उस समय दूसरी टीम दण्ड की भागी होती है।

उस समय जब एक ही दल के दो खिलाड़ी गेंद को एक ही समय में छूते हैं, तो इसे द्वि-स्पर्श माना जाता है (रोक के दौरान नहीं)। यदि उन दो खिलाड़ियों में से केवल एक इसे छूता है तो एक स्पर्श मान्य किया जाता है।

खेल के समय यदि दुहरा नियम भंग होता है अर्थात् दो विरोधी खिलाड़ी एक ही समय में व्यक्तिगत नियम का उल्लंघन करते हैं तो गेंद को दूसरी बार खेला जाना आवश्यक होता है।

'स्पाइक' अथवा प्रहार

इस खेल में प्रहार एक खिलाड़ी द्वारा ऊपर उछलकर गेंद को नीचे की तरफ एक हाथ से मारकर किया जाता है

उत्थान की क्रिया

इस क्रिया का प्रयोग प्रहार से पहले किया जाता है। प्रहार करने वाले खिलाड़ी का साथी गेंद को ऊपर की तरफ उछाल... है, ताकि प्रहारक खिलाड़ी गेंद पर बलपूर्व... प्रभावशाली प्रहार कर सके।

रोक

प्रहार के विरुद्ध यह रक्षात्मक क्रि... है। इस क्रिया के द्वारा विरोधी पक्ष ... आक्रमण रोक दिया जाता है। इस कार्य ... प्रभावशाली ढंग से अग्रिम पंक्ति के स... खिलाड़ी कर सकते हैं। वैसे सामान्यता ... खिलाड़ी ही इस क्रिया में भाग लेते हैं। य... रोक के समय गेंद में रोक डाली है, गेंद ... फिर से द्वितीय-स्पर्श के रूप में खे... सकता है।



रोक उत्पन्न करने वाले खिलाड़ी स्थि... के अनुसार अपने हाथों को जाल के ऊप... तक फैला सकते हैं, परन्तु नियम के अन्तर्ग... गेंद पर प्रहारक खिलाड़ी के प्रहार होने ... बाद ही वे गेंद को स्पर्श कर सकते हैं।

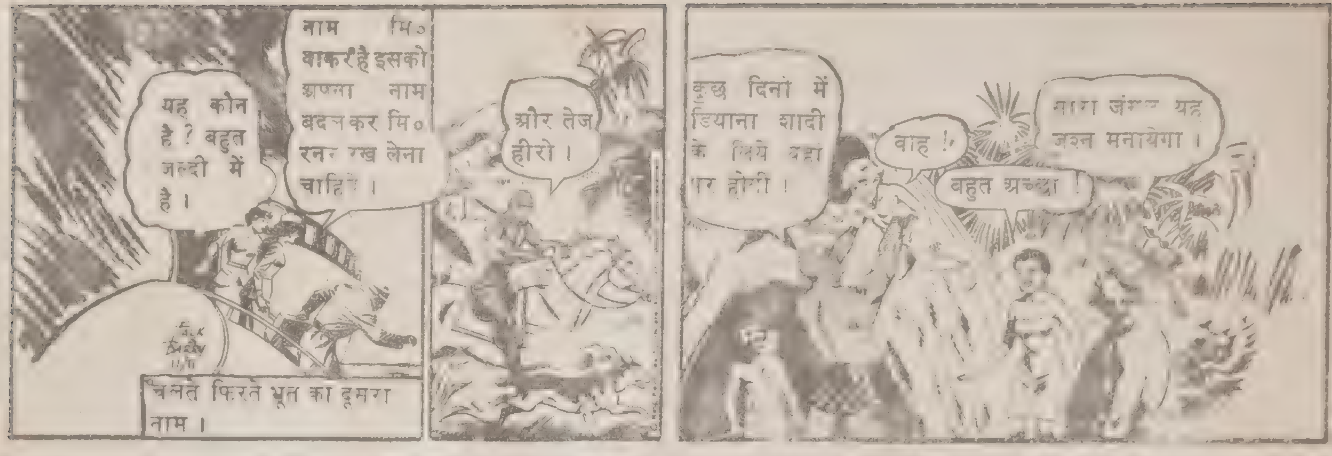
नेट (जाल) पर खेलना

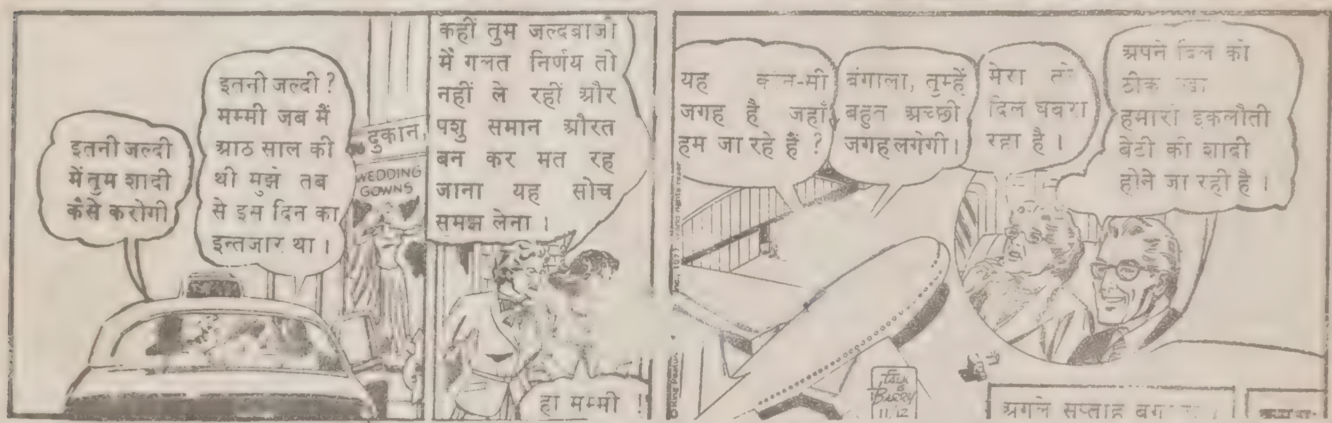
जाल पर खेलने से सम्बन्धित निम्न... लिखित नियमों पर ध्यान रखना आवश्य... है—

प्रथम—यदि खेल के मध्य ('सर्विस' ... अतिरिक्त) गेंद जाल को छू जाती है, ... उसे अनुचित नहीं समझा जाता। गेंद ... जाल में जाने के बाद भी उस खिलाड़ी ... अलावा, जिसने अभी-अभी मार की है, को... अन्य खिलाड़ी इसे खेल सकता है। य... फेंकी गई गेंद जाल पर इतनी अधिक प्रबल... से टकराती है कि जाल-विरोधी टीम ... किसी खिलाड़ी को छू लेती है तो इसे विरो... टीम के खिलाड़ी का दोष नहीं माना ज... सकता।

क्रमशः


फैणटम
और
शादी की तैयारियां
ओह, डेव मेरी तो इच्छा थी कि डियाना किसी अच्छे आदमी से शादी करे, जैसे स्वेन या हैनरी है···
उस भूत से नहीं···जिसे रखवाला भी कहते हैं···
लिली, डियाना तो उसे बचपन से ही प्यार करती है···
हम डियाना की शादी उससे कैसे करें ? क्या वह पैदल चल कर चर्च में जाता दिखाई देगा और क्या वह उन्हीं कपड़ों में जायेगा ?
मुझे तो कुछ पता नहीं है चल कर उन दोनों से पूछ लेते हैं शायद उनका कोई पहले से प्लान हो ।
सिसकियां सिसकियां
क्या तुम यही कपड़े पहनकर दूल्हा बनोगे ?
मुझे पता है कि यह कपड़े बड़े अजीब लगेंगे, लेकिन श्रीमती पामर, मुझे यही पहनने पड़ेंगे ।
इस तरह की शादी हम यहां कैसे करें ? लोग हमारा मजाक उड़ायेंगे !
शादी यहां नहीं होगी ।
शादी तो हमें खोपड़ी वाले सिंहासन के सामने करनी है···वहां के मुखिया भी उपस्थित होंगे और छोटे कद वाले बान्दर तथा स्पेशल मेहमान भी होंगे···
खोपड़ी···छोटे बौने···डेव··· मेरा सूंघने वाला नमक ले आओ !
आखिर तुमने मम्मी से पूछ ही लिया ! क्या बहुत डर लग रहा था ?
हाँ डियाना, अब मुझे घने जंगलों में जाकर शादी की तैयारी करनी चाहिये अपने अंकल डेव और मम्मी को एक सप्ताह तक ले आना ।
एक सप्ताह ? मुझे और समय चाहिये !
प्रिये एक सप्ताह भी बहुत ज्यादा है ।
वह चला गया ? वह बहुत तेज चलता है ।
यह उसकी आदत है !
स्वैन, डियाना, तुम्हें जिस मुसीबत का सामना करना पड़ा मैं उसके लिये क्षमा चाहता हूं, तारा एक बहुत बड़ी मुसीबत थी ।
तुमने एक महान् कार्य किया है ।
समाचार पत्र
ताराकीमो का कहना है कि गैर कानूनी तरीके से यू० एन० मिशन का यहां से बाहर जाना···
धन्यवाद !
तुम्हारे लिये अगली नियुक्ति फोर्स में शांति-पूर्ण ढंग की सभा में है ।
क्षमा करना, मुझे यह मौका छोड़ना पड़ेगा
मैं शादी करने जा रही हूं ।
बहुत अच्छा क्या हम उसको जानते हैं ?
एक महान आदमी जिसकी वजह से आज हम यहां सुरक्षित हैं ।



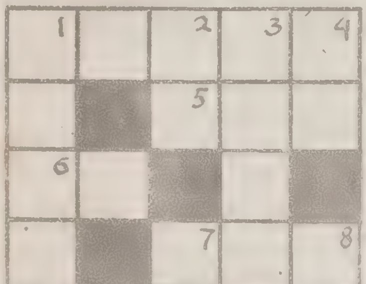


दीवाना

वर्ग पहेली

10रु. पुरस्कार जीतिए

अन्तिम तिथि:
१६ अगस्त १६७८



संकेत बाएं से दाएं

१. यहां ऊंचा सुनने वालों को हिचकी आती है ? (५)

५. एक ऐसी छड़ जिसके सिरे पर एक बड़ी संख्या है । (३)

६. बेहद गाढ़ी दोस्ती में भी धोखा है । (२)

७. एक पड़ोसी देश का पुरानापन । (३)

९. किसी भीगे-भीगे समां वाले साल का प्रेमी ? (३)

ऊपर से नीचे

१. ऐसे होश उड़ जायें तो चिन्ता मत कीजिए इसमें बीच में औषधि है बेशक उसके अलावा चिकचिक है । (५)

२. यह आपको माफिक आ जाए तो लीला रचा सकते हैं । (२)

३. खाने के बाद एक लड़की लेकर पहुंची है तो इसे मुंह में डाल लीजिए । (४)

४. चमन के दाख में स्वाद देखो । (२)

७. प्रा याम बच्चों की चीज है यदि आपको सिर-दर्द का पता है तो । (२)

८. एक तमाशा कलाकार जो उलट-पुलट होकर आपका दस किवटल मनोरंजन करता है ! (२)

जोड़िये पहेलियां

१. सरोवर में चिड़ियां जोड़िये और आप को गड़बड़ी नही मिलेगी।

२. मौत के पीछे आप व मैं जुड़ जायें तो घाव में आराम होगा ।

३. शरीर में प्राप्ति जुड़ने पर आप एक शहर में पहुंचेंगे ।

४. होठों से इन्कार जुड़ जाये तो आपको अर्थ समझ आयेगा ।

५. समय में लेवल जोड़ा जाये तो लेप हो जायेगा ।

उत्तर—
१. ताल-मेल
२. मर-हम
३. देह-ली
४. मत-लब
५. पल-स्तर

क्यों और कैसे

प्र० : रूमालों का प्रयोग मनुष्य द्वारा कब से किया जा रहा है ?

उ० : मनुष्य रूमाल का प्रयोग प्राचीनकाल से ही किसी न किसी रूप में करता आ रहा है । लोमड़ी की पूंछ को डंडे पर बांध कर उसे पंखे तथा रूमाल के समान प्रयोग किया जाता था, सम्भव है यही रूमाल का सबसे पहला रूप हो ।

बहुत सी जंगली जातियों के बारे में भी विदित है कि वो एक प्रकार की चौकोर चटाई सी बुनकर सिर पर बाँधते थे तथा रूमाल के समान पसीना पोंछने के काम में लाते थे ।

यूनानी तथा रोमन काल में लोग रूमाल के अतिरिक्त नैपकीन का भी प्रयोग करते थे । नैपकीन का प्रयोग खाने की मेज पर हाथ पोंछने के काम में होता था चौकोर कपड़े के सिले हुए रूमाल, अधिकतर यात्रा इत्यादि पर साथ ले जाने के काम में लाये जाते थे ।

सत्रहवी शताब्दी में फ्रांस में रूमाल बहुत सुन्दर-सुन्दर बेल इत्यादि तथा नग जड़कर बनाये जाते थे । अठारहवीं शताब्दी आते-आते सुँघनी के चलन के साथ स्त्रियों द्वारा रंगीन रूमालों का प्रयोग आरम्भ हुआ ।

फ्रांस के लुई १६ को उनकी पत्नी मेरी ऐन्टोनेट ने एक फरमान जारी करने के लिए बाधित किया, जिसके अनुसार रूमाल गोल तथा लम्बोतरे बनाने पर रोक लगा दी गई तथा रूमाल को केवल चौकोर ही बनाना आवश्यक था ।

प्र० : शरद ऋतु में पत्तों का रंग बदल क्यों जाता है ?

उ० : वर्षा ऋतु में पेड़ पौधे चारों ओर हरे ही हरे दिखाई देते हैं । हरे रंग में कितने ही भिन्न शेड दिखाई देते हैं फिर भी प्रतीत ऐसा होता है कि प्रकृति द्वारा एक ही कूंची से सबको रंगा गया है ।

प्रकृति में पाये गये इन सभी पेड़ पौधों के पत्तों के हरे रंग का सम्बन्ध पत्तों में पाये जाने वाले तत्व क्लोरोफिल से होता है । पत्तों में क्लोरोफिल ही खाद्य पदार्थ उत्पन्न करने का सम्पूर्ण कारखाना होता है । पत्तों का दो तिहाई रंगद्रव्य या रंग उन्हें क्लोरोफिल से मिलता है परन्तु उनमें दूसरे रंग भी विद्यमान होते हैं, जो क्लोरोफिल की बहुतायत की वजह से दिखाई नहीं दे पाते । दूसरे तत्वों में एक होता है जैन्तोफाइल (Xanthophyll) जो कि कारबन हाइड्रोजन तथा आक्सीजन युक्त होता है इससे पत्तों को पीला रंग प्राप्त होता है । इससे पत्तों को लगभग २३ प्रतिशत रंजक प्राप्त होता है करोटिन, जिससे गाजरों को उनका रंग प्राप्त होता है, भी पत्तों में होता है । तथा एक और रंजक एन्थोकाइनिन भी लगभग १० प्रतिशत पत्तों में पाया जाता है इस तत्व से पत्तों में लाल रंग बनता है ।

वर्षा ऋतु में पत्तों के दूसरे कोई भी रंजक क्लोरोफिल के अधिक पैदा होने के कारण दिखाई नहीं देते, परन्तु शरद ऋतु आने पर गर्मी की कमी के कारण पत्तों में एकत्रित भोजन टहनियों तथा तने की ओर जाने लगता है क्योंकि इस ऋतु में नया भोजन बनना बन्द हो जाता है । भोजन के पौधों के दूसरे भागों में जाने से पत्तों में क्लोरोफिल धीरे धीरे घटता जाता है तथा पत्तों में विद्यमान दूसरे रंगीन तत्व दिखाई देने आरम्भ हो जाते हैं । इसी समय पत्तों में कई नये भिन्न-भिन्न रंग दिखाई देते हैं । झड़ने से पहले पत्तों की जड़ पर अणुओं की एक सघन सतह बन जाती है तथा तेज हवा आते ही पत्ते झड़ने आरम्भ हो जाते हैं पत्ते के गिरने पर डाली पर हल्का सा निशान पत्ते के स्थान पर रह जाता है ।

सदा हरे रहने वाले पौधों के पत्ते सारे एक साथ न सूख कर सारे वर्ष धीरे धीरे सूख कर गिरते रहते हैं इसी कारण ये सदा हरे-हरे दिखाई देते हैं ।

सुरेश कुमार सिंह—डिब्रूगढ़

प्र० : शामोइस (Chamois) कपड़ा क्या होता है ?

उ० : शामोइस कपड़े का प्रयोग इस लिये किया जाता है क्योंकि ये बहुत ही अधिक नरम होता है तथा इससे सफाई करने पर किसी भी सतह पर किसी भी प्रकार का कोई चिन्ह नहीं पड़ने देता । अधिकतर इसका प्रयोग मोटर कार तथा फर्नीचर की सफाई में किया जाता है । शामोइस कपड़ा वास्तव में शामोइस नामक जानवर की खाल का होता है । इस खाल को बहुत ही नरम चमड़े में बदल लिया जाता है । परन्तु शामोइस जानवर बहुत विरला है इस कारण अमरीका इत्यादि देशों में बिकने वाला शामोइस अधिकतर बहुत बढ़िया किस्म की भेड़ की खाल से ही बनाया जा रहा है ।

बहुत समय पहले शामोइस पशु यूरोप के समतलीय क्षेत्रों में रहता था परन्तु ज्यों-ज्यों नरम गोश्त और खाल के लिये इसका शिकार बढ़ा त्यों-त्यों ये जानवर नीचे के क्षेत्रों में स्थान पर पर्वतीय क्षेत्रों में छुपकर रहने लगा । इनका अधिकतर निवास ऐल्प्स तथा पाइरीनीज पर्वत श्रृंखला में है । ग्रीष्म ऋतु में ये पर्वती बर्फीली चोटियों के बिल्कुल पास तक पहुंच जाते है ।

पहाड़ी बकरे के समान ही शामोइस बकरे [illegible] कि[illegible] का हिरन है । संसार में पाये जाने वाले पशुओं में ये सबसे शर्मीला पशु है, इसकी देखने तथा सूंघने की शक्ति बहुत अधिक होती है तथा इस कारण ये किसी खतरे का आभास बहुत जल्दी पा जाता है । पहाड़ों पर चढ़ते समय ये हिरन से भी तेज तथा पहाड़ी बकरे से भी अधिक सावधान होता है ।

कुछ लोगों का कहना है कि इनके झुंड चरते समय एक दो चौकीदार खतरे से सावधान करने के लिए अलग खड़े रखते हैं तथा बाकी के सारे पशु आनन्द से चरते रहते हैं । ये चौकीदार खतरे का आभास पाते ही सीटीनुमा आवाज निकाल कर झुंड को सावधान कर देते हैं । ये तंग घाटी तथा खड़ी चट्टानों के नीचे तथा ऊपर इतनी तेजी से भाग जाते हैं कि मनुष्य तक के लिये वहाँ पहुंचना असम्भव होता है ।

शामोइस पशु बकरे के बराबर लगभग ६५ पाउंड वजन का होता है । इस पशु का भूरा या ग्रेकोट मौसम के साथ रंग बदलता है जो कि गर्मियों में हल्के रंग का हो जाता है । सफेद रंग के शोमाइस भी कभी-कभी देखने में आते हैं । इनके मारने के बारे में अंधविश्वास है कि मारने वाले को परियाँ या बौने एक वर्ष के भीतर ही मार देते हैं । गर्मियों में अधिकतर झुंड शिशुओं तथा मादाओं के ही पाये जाते हैं ।

प्रमोद कुमार अन्तकाल—आगरा

चलता फिरता जोकर

—लोकनाथ

साहित्यकारों की महफिल जमी थी। हवा का एक झोंका आया साहित्यकारों के पंत, निराला, देव, दिलीप, राजेश नुमा बाल फड़फड़ा उठे।

कवि रसहीन चिल्ला उठे। "अमां यार कविदुम ! तुम्हारे बालों पर टिड्डियों का हमला !"

सारे साहित्यकार चौंक पड़े। सबों की नजरें सागर के घुंघराले बालों पर जम गईं। मित्र मंडली की हंसी रोके नहीं रुक रही थी।

कविदुम शान्त ! उसकी उंगलियां यंत्र सी अपने बालों पर फिरने लगीं। उसकी परेशानी पर रेखाएं क्षण-क्षण उभरने लगीं। मिटने लगीं। वह एक झटके से उठा और घर के अंदर चला गया। आइने में चेहरा देखा। सर के बाल जगह-जगह से चत्ता-चत्ता कर उड़ गए थे और घुंघराले बालों के बीच-बीच से सफेद चमड़ी झांक रही थी। जैसे लहलहाते खेतों के बीच-बीच से फसल चुरा ली गई हो।

बाहर से साहित्यकार मित्रों की हंसी रह-रह कर आ रही थी। कहानीकार झमेला जी ने बाहर से हाँक लगाई। 'बाहर निकलो कविदुम। शरमाने की क्या बात है। आज पहली अप्रैल है, किसी ने मजाक से सफाचट लगा दिया होगा।'

कविदुम को इस अप्रैल फूल के मजाक पर भी क्रोध आया। उसकी हिम्मत मित्र मंडली के सामने जाने की नहीं हुई। साहित्यकार बंधु वापस लौट गए। वह घंटों आइने के रू-ब-रू रहा। उसका चेहरा अच्छा खासा जोकर जैसा लग रहा था।

रात भर कविदुम बिस्तर पर सो न सका। रह-रह कर उसे अपना विकृत चेहरा याद हो आता और तब उसका दिल बैठ जाता। उसने यह सोचकर संतोष की सांस ली कि कुछ दिनों में बाल फिर उग जाएंगे और समस्या का अंत हो जाएगा।

एक दिन, दो दिन। सप्ताह, दो सप्ताह। परन्तु उड़े बालों के स्थान पर नए बाल फिर न उगे। समय के साथ आड़े-तिरछे बाल और भी कुछ-कुछ स्थान लेकर उड़ गए। और तब उसने महसूस किया कि यह सफाचट की करामात नहीं हैं, बल्कि एक बीमारी है।

बड़े-बुजुर्गों ने जब जगह-जगह से नुचे-नुचे बालों को देखा तो उनकी आँखें आश्चर्य से फैल गईं। बीमारी का नामकरण किसी ने न किया, पर उसकी गम्भीरता को सबों ने व्यक्त किया।

एक वृद्ध ने कविदुम को बताया कि उसे 'टुनकी' की बीमारी हो गई है। जिससे वह हक्का बक्का रह गया। बीमारी का नाम चारों ओर इत्र-सा फैल गया था और वह टुनकी का मरीज कहलाने लगा।

यार-दोस्तों के मसवरे पर डाक्टरी इलाज का दौर चला। कविदुम होमियोपैथ की शरण में गया। तीस पावर से हजार पावर की गोलियों को हजम कर गया, लेकिन कोई लाभ न हुआ।

मंत्र-तंत्र का दौर चला। पूरे शरीर में ताबीजों का मेला लग गया। साधु-फकीरों के लिए घर का दरवाजा स्वतंत्र हो गया। धुएं और जी मिचला देने वाली गंध से उसका दम घुटने लगा, पर स्थिति ज्यों की त्यों बनी रही।

बड़े-बड़े वैद्यों से सम्पर्क स्थापित किए गए। चटक संहिता और हकीमी किताबों की मूल प्रतियों की खोज की गई। आयुर्वेद में उसने अपनी बीमारी का नाम 'पालित' रोग पढ़ा और उसके निदान में जुट गया। जिससे उसका पूरा घर लुकमान का डेरा बन गया। 'भृंगराज' की लेप उड़े हुए बालों की जगह पर लगाई जाने लगी। हाथी दाँत को पत्थर पर घिस कर मलहम बनाया जाने लगा। विषधर, गेहूंपन, सांप के तेल की खोज की जाने लगी। रंग-बिरंगी, नरम-कटीली जड़ी-बूटियों की दवाई व्यवहार में लायी जाने लगी। किन्तु मर्ज बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की।

मुसीबत चारों ओर से आती है। इस बीच एक पत्र आया। पत्र कविदुम की शादी के सिलसिले में था। लड़की वाले आगामी लग्न में शादी करना चाहते थे। जिसमें माह छः मास शेष बच रहे थे। कविदुम और उसके परिवार वाले बौखला उठे।

घर वालों ने संकल्प किया कि जल्दी इस बीमारी को दूर किया जाए। परन्तु रोग मुस्करा रहा था—धन से स्वास्थ्य नहीं खरीदा जा सकता है।

खोजते-खोजते इस रोग के विशेषज्ञ के पास कविदुम को ले जाया गया। विशेषज्ञ महोदय ने इस रोग को 'एलोपेशिया' बताया। एक पैथ इलाज शुरू हुआ। सारे बाल कविदुम के मुंड़ा दिए गए।

उड़े हुए बालों से खाली जगहों पर के फाइम "हेयर टॉनिक लगया जाने लगा।" 'एलोपेक्स' का पेन्ट किया जाने लगा चिकनी चमड़ी पर 'साइकालोन' का इंजेक्शन दिया जाने लगा। सर में इंजेक्शन! कतिपय प्रसिद्ध डाक्टर चौंके। विशेषज्ञ आखिर विशेषज्ञ ठहरे।

सारे बाल मुंड़े। जितना थे, उतना उगे। बाकी रोग के पर्दे के नीचे दबे रहे और फिर सर पर एक दागदार जमीन तैयार हो गई। चिकनी-चिकनी-चमड़ी सहारा की मरुभूमि सी चमकती और झाड़ी नुमा उगे बाल रेगिस्तान में जगह-जगह बिखरे "ओएसिस" की याद दिला जाते।

कविदुम जिधर निकलता, सैकड़ों नजरें एक साथ उसके सर पर जम जातीं। आँखों ही आँखों में इशारे होते, जो उसके दिल को छू जाते। सीधे तौर पर कविदुम एक चलता फिरता जोकर लगने लगा था। परिस्थिति पर मुलम्मा चढ़ाया गया। सउदी अरब के शाह जैसा उसने अपने सर पर तौलिया बाँधना शुरू कर दिया।

कवि सम्मेलनों में जब वह अपनी कविता पाठ करता तो ऐसा लगता जैसे अपना साहित्य एक विदेशी होकर कह रहा हो।

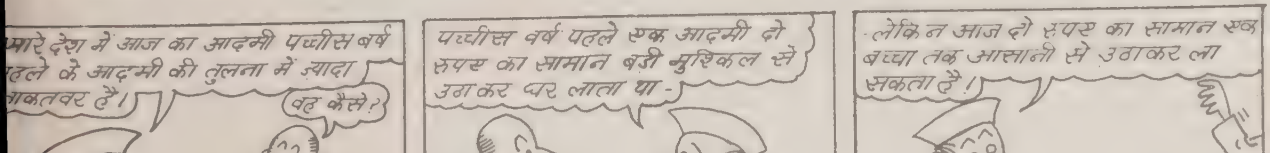
रोग में कुछ सुधार न हुआ शादी के शेष दो मास बच गए थे। अपनी बीमारी को आसाध्य जान उसने इलाज पर ब्रेक लगा दिया था और वह निर्णय कर चुका था कि तौलिया बाँधे ही शादी करेगा।

बिना इलाज का एक मास और गुजरा और एक दिन उसे सुखद आश्चर्य हुआ, जब उसकी सफेद चमड़ी पर बाल के रोएं उग आए। तब उसे विश्वास हुआ, तम में डूबी रात चाहे कितनी ही काली क्यों न हो, एक दिन सुबह जरूर आती है।

परोपकारी



बात-बे-बात की



हास्य कहानी

तीसमार खां ने डाकू पकड़ा

—आलोक माथुर

तीसमार खां जान हथेली पर लिये भाग रहे थे। एक आदमी नंगी तलवार लिये दौड़ा आ रहा था···तीसमार खां ने बोखला कर नदी में छलांग लगाई···और तभी उनकी आंख खुल गई। तीसमार खां हड़बड़ा कर उठ बैठे। देखा उनका चेला उन्हें झकझोर रहा था। वे जम्हाई लेते हुए बोले, 'तुमने बहुत बुरे मौके पर जगाया। सपने में मैं एक डाकू को दौड़ा रहा था। अगर तुम न जगाते तो मैं उसे दबोच ही लेता।'

'उस्ताद सपने की बात भूल जाइये।' चेले ने कहा, 'सचमुच के डाकू आ गए हैं। उन्होंने सेठ कंजूसीमल की हवेली पर धावा बोल दिया है। जल्दी चलो, अब तुम्हीं उस की रक्षा कर सकते हो।'

डाकूओं की खबर सुनते ही तीसमार खां को दुबारा नींद आने लगी। वे जल्दी से लम्बे होते हुए बोले, 'डाकूओं का जमाना बहुत पीछे छूट गया। अब तो बच्चे डाकू पकड़ा करते हैं। मैं ऐसे छोटे-मोटे कामों में हाथ नहीं लगाता।'

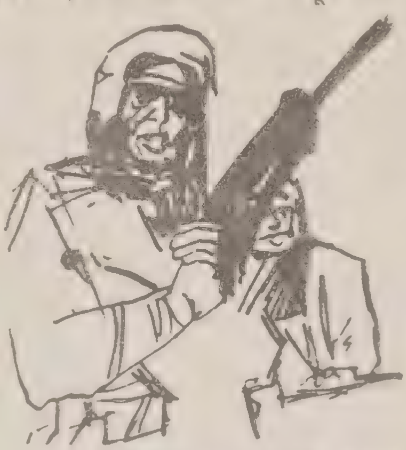
वे खर्राटे लेने की कोशिश करने ही वाले थे कि चेले ने उन्हें जबरदस्ती खड़ा कर दिया और सेठ कंजूसीमल के घर की तरफ घसीटने लगा।

तीसमार खां घबराकर बोले, 'अरे ठहर भाई, 'मुझे अपनी खानदानी बन्दूक तो ले लेने दे।'

उनकी बन्दूक सचमुच खानदानी थी। न जाने उनकी कितनी पीढ़ियों ने उनकी उसी बन्दूक से कौवे उड़ाए थे। बड़ी सी बन्दूक को अपने छोटे से शरीर पर संभालते हुए वे जब सेठ कंजूसीमल की कोठी की तरफ को बढ़े तो डर के मारे उनका बुरा हाल था। मगर मरता क्या न करता। उन का अपना चेला ही उनकी इज्जत को ललकार रहा था। चेले की भी क्या गलती थी, तीसमार खां ने खुद ही तो गांव भर में अपनी बहादुरी के किस्से मशहूर किए थे।

आधा मील दूर से ही तीसमार खां ने ललकारना शुरू कर दिया, 'खबरदार, हम आ गए हैं।'

डाकूओं का सरदार उन्हें देखते ही लपका। तीसमार खां को ऐसे मौके की उम्मीद न थी। अब उन्हें याद आया कि वे बन्दूक में बारूद भरना तो भूल ही गए थे। उनकी बन्दूक कोई नए जमाने की तो थी नहीं कि तोड़ा और कारतूस भरकर फायर कर दिया। मौके से एक घण्टे पहले उसे भरना शुरू किया जाता था तो वह काम आती थी। मगर अब तो आफत सर पर आ गई थी। वे डाकू को ललकारते भी जा रहे थे कि खबरदार, दूर ही रहना मैं बहुत खतरनाक आदमी हूं और बेकाबू होते हाथों को संभालते हुए किसी तरह बन्दूक भी भरते जा रहे थे। आखिर जब डाकूओं का सरदार सिर पर ही आ गया तो वे बन्दूक को कन्धे पर रखकर भागने लगे। मगर बेचारे भागते कैसे ? डर के मारे टांगें भी तो साथ नहीं दे रही थीं। आखिर वे हांफते हुए खड़े हो गए और बन्दूक तानकर बोले, 'ख...ख... खबरदार, म...म...मैं गोली मार दूंगा।



डाकूओं के सरदार को भी मजाक सूझी, बोला—'मुझे बच्चों की बन्दूक से डराते हो।'

'इस धोखे में मत रहना, हाँ, मैं कहे देता हूं। यह बिल्कुल असली बन्दूक है।' तीसमार खां गड़बड़ा कर बोले।

'लाओ देखूं तो।'

'हां हां, लो देख लो बिल्कुल असली बन्दूक है। तीसमार खां ने यह कहकर बन्दूक उसे थमा दी।'

बन्दूक पाते ही डाकू कहकहा मारकर हंस पड़ा। और फिर बोला, 'अब तो तुम्हारी बन्दूक से ही मैं तुम्हारी खोपड़ी उड़ाऊंगा।'

तीसमार खां की समझ में अब प्राय... कि उन्होंने क्या मूर्खता कर डाली। बेच... धोती थामकर भागे। डाकू ने गोली चला... यह तो अच्छा हुआ कि गोली उन्हीं ... खानदानी बन्दूक से निकली थी। बरसों ... रखा हुआ सीलनदार बारूद फुसफुसाकर ... गया और वे बाल-बाल बच गए। वे अ... भी तेजी से भागे मगर उन्होंने ललकार... बन्द नहीं किया था। भागते भी जा रहे ... और कांप-कांप कर कहते भी जा रहे थे ... खबरदार, जहाँ हो वहीं से लौट जाओ ... कहे देता हूं मैं बहुत खतरनाक आदमी हूं...

मगर डाकू सरदार उन्हें दौड़ाता ... जा रहा था। सामने एक अंधेरी कोठ... दीखी और तीसमार खां बिना कुछ सो... समझे उस कोठरी में जा घुसे। डाकू ... उस कोठरी में घुसा। उसके घुसते ही अं... में ही न जाने किसने उसके सीने पर ठोक... मारी···ठोकर भी ऐसी भयंकर कि ह... सीना थामकर चीखता हुआ बाहर की त... भागा और कुछ ही कदम चलकर मुंह ... ढेर मारा झाग छोड़ता हुआ गिरकर बेहो... हो गया।

सारे गांव में हल्ला मच गया कि ती... मार खां ने डाकूओं के सरदार भूपत सि... को मार-मार कर बेहोश कर दिया है। ... लोग उसी अंधेरी कोठरी की तरफ दौड़... सरदार की बेहोशी की खबर पाकर उस... सारे साथी भी डर गए और मैदान छोड़... भाग खड़े हुए। लोगों ने तीसमार खां ... खूब पीठ ठोकी।

गांव वाले भूपत सिंह को उठाकर ... की तरफ कूंच कर गए, मगर तीसमार ... अभी भी भौंचक्के से उसी अंधेरी कोठ... के सामने खड़े थे। उनकी समझ में ही ... आ रहा था कि यह सब कैसे हो गया... तभी अचानक एक भयंकर भैंसा हुंका... हुआ कोठरी से बाहर निकला और तीस... खां के पीछे झपट पड़ा असल में इसी भैंसे ... यह सब माया थी। अंधेरे में भूपत इसी ... से टकरा गया था और इसी के सींग ... टकरा कर बेहोश हुआ था।

अब हालत यह थी कि भैंसा तीस... खां को दौड़ाये जा रहा था और वे स... भागते हुए चिल्लाये जा रहे थे, 'खबर... मैं बहुत खतरनाक आदमी हूं, हां·····'।


पंचतंत्र
अरे, अरे मैं यह क्या देख रहा हूँ ? सहसा अपनी आंखों पर विश्वास नहीं होता। बैसाखी नन्द आज मजे से खाली चला आ रहा है।
तुम आज खाली कैसे आ रहे हो ? वह कुम्हार कहां गया जो तुम पर रोज गमले लाद कर घूमा करता था ? बोझ नहीं है और खुश नजर आने के बजाय तुमने मुँह लटका रखा है।
कल रात मेरे मालिक कुम्हार को अचानक मियादी बुखार चढ़ आया। बेचारा बिस्तर में लेटा है। आज गमले बेचने भी नहीं जा सका. वह बहुत तकलीफ में है। मैं खुश कैसे हो सकता हूं।
हद हो गयी ! तुमको आदमी ठीक ही मूर्खानन्द कहता है। दिन भर पीठ पर बोझ उठाये फिरते हो। कभी सांस नहीं लेते। वह कुम्हार तो तुम्हारा दुश्मन है, कितनी मेहनत कराता है तुमसे ? एक तुम बुद्धू हो कि उसके बीमार होने पर उदास फिर रहे हो। तुम्हें तो आजादी मिली है. खूब खाओ. उछलो-कूदो और लोटन लगाओ और प्रार्थना करो कि वह कुम्हार खाट से कभी न उठ पाये। कभी चालाकी से काम लो. उसके गमलों समेत लोट जाओ और सारे गमले फोड़ दो।
मैं तो ऐसे ही ठीक हूं भई ! इंसान मुझे मूर्खानन्द कहता है तो कहने दो। सब इंसान ऐसा कहने वालों में थोड़े ही हैं। कई ऐसे भी हैं जिनकी मेरी विचारधारा से सहमति है।
लो और सुनो इस बेवकूफ की बात ! सारे आदमी इसका मजाक उड़ाते हैं और यह कहता है कई इन्सान इससे सहमत हैं।
जरा मैं भी सुनूं उन महापुरुषों के नाम जो तुम्हारे हिमायती हैं।
हां, हां क्यों नहीं ? बुद्ध, गांधी, नेहरू, गुरु नानक, मुहम्मद, ईसा, राम, कृष्ण वगैरह वगैरह यह सब यही तो कहते थे कि परिश्रम की कमाई खानी चाहिए, खूब मेहनत करनी चाहिये। ईमानदारी का साथ नहीं छोड़ना चाहिये। दूसरों के दुख को अपना दुख समझना चाहिए।
शिक्षा—जिन्हें हम मूर्ख समझते हैं वास्तव में वे इन्सानियत की कसौटी पर हम से ज्यादा खरे उतरेंगे। प्रायः हम कामचोरी और बेईमानी को ही बुद्धि का सबूत समझ बैठते हैं।

कोई है

अर्जुन 'अरविंद'

दफ्तर से लौटते समय घर के ग्रहाते में प्रवेश किया तो ग्राठ बज चुके थे। भाटिया जी की बाल सेना का जुलूस नदारद था। सोचा—ग्राज कुछ नई बात हुई है। यह भी सम्भव है ग्राज भाटिया परिवार बाल सेना के साथ ही कहीं मेहमान बन कर चला गया हो। लेकिन यह भी समझ ग्राने वाली बात न थी। भला इस महंगे युग में कौन सिर फिरा इस विशाल परिवार को मेहमान बनाना स्वीकार करेगा ? भाटिया जी ग्रौर श्रीमती भाटिया को छोड़ बच्चों की संख्या चार-छह नहीं, पूरी तेरह है। वे सब इकट्ठे होकर ग्रहाते में जुलूस बनाते। कभी सभा करते कभी भाटिया दम्पति को ग्रपनी छोटी-मोटी मांगें मनवाने के लिए ग्रान्दोलनात्मक धमकी देते। धमकी कारगर न होने पर प्रदर्शन, जुलूस ग्रौर तोड़-फोड़ की कार्यवाही की योजनाएं बनतीं। लेकिन श्री सम्पूर्ण भाटिया भी किसी कुशल मंत्री से कम नहीं। कभी ग्रपनी बाल-सेना की माँगों का कुछ अंश पूरा कर दिया जाता, कभी रसीले ग्राश्वासन देकर टाल दिया जाता। ग्रपनी बाल-सेना की कार्यवाहियों से पड़ौसी भाटिया जी ग्रसर प्रूफ हो गये।

घर के चौक में तो बाल सेना का एक भी सिपाही सामने न पड़ा। ऊपर पहुंच कर देखता हूं—कमरे में अंधेरा है। दरवाजा खुला है ग्रौर ग्राशा बिस्तर पर गठरी बनी पड़ी है। मैंने ज्योंही ग्राशा को झिंझोड़ा, वह चीख कर मेरे हाथ से लिपट गई। उसका शरीर बुरी तरह कांप रहा था। सांस धोंकनी की तरह चल रही थी। ग्राशा को इस हाल में देख मेरे होश छू होने लगे। जी में ग्राया, मैं चीख मार कर पड़ौस को इकट्ठा कर लूं। लेकिन मैंने ऐसा कुछ भी न किया, उसके समीप बिस्तर पर बैठ गया। कुछ देर बाद ग्राशा को होश ग्राया। मैं ग्रब तक यही समझा था कि या तो ग्राशा को कोई दौरा पड़ गया या उसने मेरे साथ मजाक किया है। लेकिन कुछ देर बाद पता चला कि उसने मेरे साथ मजाक नहीं किया है वह डर गई थी ग्राशा ने ग्रपनी डर वाली बात सुनाई तो हंसी के मारे पेट में बल पड़ गये। ग्राशा हैरान थी—'तुम्हें ग्राज हो क्या गया है ?'

ग्राशी, हो लो तुम्हें कुछ गया है। कॉलिज से ग्रेजुएशन करने के बाद भी तुम ऐसी बातों पर विश्वास करती हो ?'

'विश्वास ग्रविश्वास की बात छोड़िये। ग्रनुराधा ने कुछ देर पहले खुद ग्रपनी ग्राँखों देखा है।'

'तुम्हारी ग्रनुराधा दी ठहरी पुराने संस्कारों की। उन्हें कोई वहम भी तो हो सकता है।

'ग्रनुराधा दी को वहम होगा ? लो ग्रौर सुनो !' ग्राशा की ग्राँखों में फिर भय-सा मंडराने लगा था। कहने लगी— तुम दफ्तर से जल्दी लौट ग्राया करो। मुझे ग्रकेले में न जाने कैसा भय लगता है।'

उस रात कठिनाई से ग्राशा को बातों में व्यस्त करना पड़ा। जब बातों में व्यस्त हो भय को भूल गई ग्रौर ग्राँखों में नींद के डोरे उतरने लगे तब मैंने संतोष की सांस ली।

मैं इस घर में नया-नया था। ग्रपनी एक ग्रदद पत्नी ग्राशा के साथ यहां ग्राये ग्रभी एक सप्ताह ही बीता था। दैनिक 'ग्रावाज' में सह-संपादकी मिली थी। केवल चार सौ रुपये मासिक वेतन पाकर ही किसी ग्रच्छे फ्लेट में रहने की केवल कल्पना मात्र ही तो कर सकता था। दिल्ली जैसे शहर में ग्रच्छा मकान मिलना ग्रासान नहीं है। मैं जिस मकान में ग्रब लगभग जम सा गया हूं वह पुराने समय का बना भारी भरकम मकान है। लेकिन ग्राश्चर्य है कि इस युग में भी उसका ग्रधिक भाग खाली ही पड़ा है। मेरे ग्रतिरिक्त केवल दो परिवार ही उसमें रहते हैं। पहला मुकेश खन्ना का जिनकी श्रीमती ग्रनुराधा खन्ना से ग्राशा की खूब पटने लगी है। दूसरा वही भारी-भरकम परिवार श्री सम्पूर्ण भाटिया का है। जिस परिवार की सम्पूर्णता देख मेरी ग्राँखें चकराने लगती हैं। भाटिया जी से बात करने का योग ग्रभी तक नहीं बन सका है। लेकिन खन्ना कभी-कभार ग्रहाते से बाहर ऊपर बरामदे से निकलते समय मिल जाते हैं ग्रौर ग्रौपचारिक बात हो जाती है।

उस दिन रविवार होने के कार जल्दी उठने को मन न हुग्रा। बिस्तर के बाद जब स्नान करके निकला त ग्रपने बरामदे में टहलते दिख गये। होते ही वह मेरे पीछे हो लिये ! पहुच मैंने कुर्सी उनकी ग्रोर बढ़ा दी ग्रपनी स्वाभाविक मुस्कान बिखेरते बैठ गये। उनकी ग्राँखें चश्मे के पीछे का निरीक्षण करने लगीं। तभी ग्रा ले ग्रायी। खन्ना ने चाय के समय व छेड़ दी जिससे गत रात ग्राशा डर ग

खन्ना कह रहे थे—'ग्रब यह छोड़ देने में ही हमारी खैर है भाई म नहीं तो किसी भी समय परेशानी सकते हैं।'

'मैं ग्रापका ग्राशय समझा नहीं जी ?'

'ग्रजी यह तो जगह ही कम्बखत है। भाटिया परिवार तो लम्बे समय रहता है। श्रीमती भाटिया एक दिन कह रही थीं कि यहां कोई न कोई ग्र ग्रनेक परिवार यहां से इसी कारण चुके हैं। सुना है एकाध व्यक्ति तो में समा भी चुके हैं।' एक लम्बी सां- कर खन्ना बोले—ग्रनु ने तो सुबह नहीं खाया। कल ही उसे कुछ दिखा

यह सब कोरा वहम है खन्ना ज

'ग्रापका कहना ठीक है। मैं भ ऐसा ही समझता था। लेकिन ग्रनु...।'

'ग्राप भी किस अंधविश्वास में जनाब ! ग्रनु भाभी को कुछ नहीं हु उन्हें कहीं जुकाम ग्रादि की शिकायत है।'

'मैं ग्रपना वाक्य पूरा भी न क कि ग्राशा बोल पड़ी—'मेरा तो रात निकलना बाकी रह गया था बस ! भयावने सपने दिखाई दिये।

'पहले ग्रनु भाभी को कुछ जाये। चलो ग्राशा !' मैंने कहा। खड़े हुए ग्रौर खन्ना के कमरे में पहुंच पीछे से श्रीमती भाटिया भी ग्रपनी सेना के सबसे छोटे जवान को कन्धे उठाये ग्रा गयीं—'यह तो मुग्रा म कुलच्छना है। हनुमान मन्दिर में चढ़ाग्रो ; ठीक हो जाएंगी।'

खन्ना परेशान थे। मैं दौड़ा



के मोड़ से डाक्टर को बुला लाया। डाक्टर ने श्रीमती खन्ना का परीक्षण किया और बताया—'विशेष बात नहीं है। मस्तिष्क संतुलन थोड़ा गड़बड़ा गया है। कुछ देर इन्हें नींद लेने दीजिए। मैं गोलियां दे देता हूं। ठीक हो जायेंगी।'

श्रीमती खन्ना दो-तीन दिन बाद ठीक हुईं। फिर भी वह कभी भी चौंक जातीं। और आशा का यह हाल था कि शाम होते ही डरने लगती कभी सपने में चीख उठती।

तीनों परिवारों के मानसिक संतुलन अस्त-व्यस्त हो गए। एक दिन भाटिया जी बोले—'क्या करें भाई साहब, इस शहर में कोई दूसरा मकान मिलना भी तो बड़ा कठिन है। नहीं तो हम इसी समय इस मकान को छोड़ सकते हैं।'

खन्ना का बुरा हाल हो गया। वह बेचारे शर्म के मारे किसी से कुछ कहते भी नहीं। उन्हे भय रहता है—लोग क्या कहेंगे ? कैसा अंधविश्वास है ? फिर भी वह साहस जुटाकर मेरे पास चले आते। मैं वहम दूर करने के लिए कुछ एक शब्दों के अतिरिक्त उन्हें दे भी क्या सकता हूं !'

सर्दी ने अपना रंग दिखाना आरम्भ कर दिया। शाम हुई कि सब बिस्तर में दुबक जाते। भाटिया जी की बाल-सेना अब अहाते में नहीं आती। कल की ही बात है रात को नौ बजे चुके थे। मैं बिस्तर में लेटा कोई उपन्यास पढ़ रहा था कि श्रीमती खन्ना की चीख सुनाई दी। मैं खन्ना के कमरे की ओर दौड़ा। श्रीमती खन्ना कह रही थीं—'हाय राम ! मैंने अभी-अभी देखा है। दो छोटी-छोटी आंखें सुलग रही थीं। मैं ज्यों ही बर्तन साफ कर कमरे में आने लगी तो मेरी ओर हाथ बढ़ाया।'

मैंने श्रीमती खन्ना से कहा—'तुम मेरे साथ जरा बाहर आओ भाभी, मुझे भी दिखाओ क्या है ?'

'नहीं दय्या, उधर देखते ही मेरे तो प्राण सूखते हैं।'

मैं खन्ना को साथ ले छत पर उस ओर बढ़ा जिधर श्रीमती खन्ना ने संकेत किया था। मकान के कोने में एक बड़ा पीपल का पेड़ है। जिसकी टहनियां खन्ना की छत पर भी फैली हुई हैं। हमने देखा, टहनी हिल रही है। खन्ना ने कहा—'वो आंखों जैसा क्या चमक रहा है ?'

मैंने उधर देखा डंडे के सहारे से टहनी को पूरी ताकत से हिलाया। 'धड़ाम।' खन्ना का दम सूख गया। छत पर एक घायल बंदर 'चीं'''चीं'''करता चीख रहा था। उसकी पीठ से खून रिस रहा था। कई दिनों से भूखा जान पड़ता था। मैंने श्रीमती खन्ना को आवाज दी —'अनु भाभी, देखो तुम्हारा भूत। मैंने इस पेड़ पर से नीचे उतार लिया है। इस बेचारे के लिए जल्दी से कुछ दाना पानी ले आओ।'

आशा और श्रीमती भाटिया भी दौड़ आयीं। श्रीमती खन्ना ने देखा और लाज से पानी-पानी हो गयीं। कहने लगीं—'मैंने तो हनुमान जी को चढ़ाने के लिए प्रसाद मंगाया था।'

आशा हंस पड़ी—'यह हनुमान जी का सैनिक ही तो है। इसे ही वह प्रसाद चढ़ा दो।' हंसी से सबके पेट में बल पड़ गये। श्रीमती खन्ना ने एक दौना बंदर के आगे डाल दिया और शर्म से सहमी अपने कमरे की ओर भाग गयीं।



अगले सप्ताह फिर एक लाजवाब सवाल।

(पृष्ठ १३ से आगे)

रूपा ने साड़ी के आँचल से अपने आँसू पोंछे और भर्राई हुई आवाज में बोली—

'सब ठीक है...।'

'तो फिर यह तुझे हो क्या गया था ?'

'मेरा दिल भर आया था...ड्रामा देख कर।'

'क्यों ?'

'इसलिए कि मेरे साथ भी एक बार ऐसा ही हो चुका है।'

'क्या मतलब ?'

'तू तो जानती है कि मैं एक गरीब विधवा माँ की बेटी हूं...माँ ने बीमारी से घबरा कर पढ़ाई के बीच में मेरी शादी कर दी थी...और तू यह भी जानती है कि तेरे जीजा जी मुझे कितना प्यार करते हैं—मेरी रुचि और लग्न देखकर वह मुझे पढ़ा भी रहे हैं...मेरी पढ़ाई के लिए स्वयं कितनी तकलीफ उठाते हैं—तनख्वाह अधिक नहीं लेकिन महीना में दस दिन ओवर-टाईम करते हैं ताकि मेरी पढ़ाई की रुचि की पूर्ति कर सकें—मुझे जरा-सी छींक भी आ जाए तो वह बेचैन हो जाते हैं...मेरे सिर में भी पीड़ा हो जाए तो वह रात-रात-भर जाग कर गुजार देते हैं—कोई चीज मुझे पसन्द आ जाए तो किसी भी मूल्य पर मेरे लिए कहीं से भी लेकर आते हैं—

'मेरे पति एक बार बीमार पड़ गये... वह रात जब उनकी तबीयत बहुत बिगड़ गई थी न जाने मैंने किस बेचैनी से गुजारी... डाक्टर ने कहा था कि उस रात वह बच गए तो समझो खतरा टल जाएगा...मैंने एक-एक पल आँखों में बिताया है...सारी रात एक क्षण के लिए भी मेरी आँखों के आँसू नहींथमे थे। मैं सोचती थी कि भगवान् न करे उन्हें कुछ हो गया तो मैं क्या करूँगी ? केवल इस विचार से ही मेरी आत्मा कांप जाती थी—मैंने मन-ही-मन फैसला कर लिया था कि अगर उन्हें कुछ हो गया तो मैं जहर खाकर अपने प्राण दे दूंगी।'

सच मान रचना...शायद वह जीवन की पहली और आखिरी रात थी जब मैंने इतना गिड़गिड़ा कर भगवान् से अपने पति के जीवन-दान की भीख मांगी थी...मैंने भगवान् के चरणों में माथा रगड़-रगड़ कर माथे में घाव कर लिया था—और फिर जब सूरज की पहली किरण के साथ उन्होंने आंखें खोलीं तो मुझे ऐसे लगा था जैसे मुझे नया जन्म मिला हो—जैसे हजारों बरस तक मेरा पीछा करने वाली काली भयानक रात का अन्त हो गया हो...एक ऐसे नये सवेरे का उदय हुआ हो जो कभी समाप्त नहीं होगा—मैं उस दिन उनके सीने पर सिर रख कर इतना रोई...इतना रोई थी कि उनका सीना मेरे आंसुओं से भीग गया था।'

कहते-कहते रूपा की आवाज फिर भारी हो गई। रचना आश्चर्यचकित भौंचक्की-सी सब कुछ सुन रही थी। रूपा ने अपने आंसू पोंछे और रुंधे स्वर में बोली—

'सच मान...आज तेरा यह ड्रामा देख कर मेरे वह घाव फिर हरे हो गए थे—तूने इतना अच्छा अभिनय किया था कि सत्यता का भान होता था।'

'रूपा !' रचना ने रूपा को ध्यानपूर्वक देखते हुए कहा, 'क्या सचमुच पति-पत्नी का सम्बन्ध इतना गहरा...इतना अटूट और इतना पवित्र होता है ?'

'हाँ रचना ! अगर पति-पत्नी का सम्बन्ध इतना अटूट, इतना गहरा और इतना पवित्र न होता तो दो अजनबी केवल फेरों से ही मृत्यु तक इस प्रकार एक-दूसरे का साथ न निभाते—सच मान जब शादी हो जाए तो फिर पति के अतिरिक्त कुछ भी अच्छा नहीं लगता, तभी तो वह लड़की जिसे माता-पिता इतने लाड़-प्यार से पालते हैं फेरों के बाद अपने माता-पिता के लिए पराई हो जाती है—अपने पति के प्यार में इतना अधिक खो जाती है कि उसे माता-पिता से दूर होने पर भी दुःख नहीं होता। अगर पति प्यार करने वाला मिल जाए तो जीवन स्वर्ग बन जाता है।'

रचना खोई-खोई-सी यह बातें सुन रही थी...न जाने क्यों बार-बार उसकी कल्पना में दशरथ का चेहरा घूम जाता था...दशरथ जिसने स्टेज पर उसके पति का 'रोल' किया था...वह बार-बार मस्तिष्क झटक देती कि वह केवल नाटक था...अभिनय था...लेकिन फिर भी उसकी आँखों में बार-बार दशरथ की छवि घूम जाती...एकाएक रूपा ने कलाई की घड़ी देखी और चौंक कर बोली—

'ओहो—ग्यारह बज गये...मैं अब चलूँगी रचना...वह मेरी राह देख रहे होंगे।'

'जरा देर ठहर जा...मैं कपड़े बदल लूँ...फिर मैं भी चलती हूं...तुझे रास्ते में ड्राप कर दूंगी।

रचना जल्दी-जल्दी कपड़े बदल कर, थोड़ी देर बाद रूपा के साथ बाहर निकल आई थी...दोनों कार में सवार हुई और कार हवा से बातें करने लगी। रूपा अपने पति की बातें किए जा रही थी...वह कह रही थी—

'रचना ! पति-पत्नी का सम्बन्ध क्या होता है...कितना दृढ़ होता है इसका अनुमान तो भगवान् राम और सीता की कहानी से भी हो सकता है—भगवान् राम ने अपने पिता का वचन पूरा करने के लिए चौदह वर्ष का बनवास लिया था और उनकी पत्नी सीता जी ने केवल पति के साथ दुःख-सुख में रहने के लिए राज महल का ऐश्वर्य छोड़ दिया था...।'

रचना कुछ न बोली...यह चुपचाप रूपा की बातें सुन रही थी। रचना ने कार ड्राइव करते-करते एक मोड़ काटा—अचानक एक गली में से एक लड़की दौड़ती हुई निकली और अगर रचना ने फुर्ती से स्टेयरिंग मोड़ कर पूरे ब्रेक न लगा दिए होते तो वह लड़की कार की लपेट में आ ही गई होती। रूपा के गले से चीख निकल गई थी। वह लड़की ठोकर खाकर सड़क पर गिरी थी और गिरी ही रह गई थी। रचना और रूपा जल्दी से कार से उतर कर सड़क की ओर झपटीं—

लड़की सड़क पर औंधी पड़ी थी...उसके माथे से खून बह रहा था और वह गहरी-गहरी सांसें ले रही थी। रूपा घबरा कर बोली—

'अरे...यह तो घायल है...और बेहोश है।'

'चलो जल्दी से उठाओ।'

रचना और रूपा लड़की को उठाकर कार की ओर ला ही रही थीं कि अचानक उसके होंठों से कराह निकाली और वह होश में आ गई। उसने रचना और रूपा को देखा और जल्दी से उनकी पकड़ से छूटती हुई चिल्ला कर बोली—

'नहीं नहीं...मैं जीना नहीं चाहती मुझे मर जाने दो—भगवान के लिए मुझे मर जाने दो।'

दोनों सन्नाटे में रह गईं। लड़की पलट कर भागने लगी तो रचना चौंक पड़ी और झपट कर लड़की का हाथ पकड़ लिया और बोली—

'ऐ बहन...यह क्या मूर्खता है।'

'जाने दो···भगवान के लिए मुझे जाने दो।'

रूपा ने उसका कन्धा पकड़कर जोर से हिलाया और बोली—

'यह क्या पागलपन है ? क्यों अपने प्राण देना चाहती हो तुम—?'

मैं अब जीकर क्या करूंगी ? मेरे लिए अब इस दुनिया में रखा ही क्या है ?'

'आखिर बात क्या है ? कुछ बताओ तो सही।'

'क्या करेंगी आप लोग जान कर ?'

'शायद हम तुम्हारे किसी काम आ सकें।'

'मेरे काम तो अब केवल मौत ही आ सकती है।'

'देखो बहन···' रूपा ने कहा, 'जीवन इतना सस्ता नहीं होता कि जरा-सी बात पर त्याग दिया जाए।'

'जरा सी बात नहीं बहन, मेरा तो जीवन ही समाप्त हो गया है।'

'लेकिन क्यों ? आखिर कुछ बताओ तो हमें। रचना ने बल देकर कहा।

'क्या किसी ने तुम्हारे साथ गलत व्यवहार किया है ? रूपा ने पूछा।

'नहीं—।'

'फिर क्या दहेज के कारण तुम्हारी शादी नहीं हो पा रही ?

'शादी हो रही है—दुःख तो इसी बात का है।'

'क्या मतलब ?'

'मेरी शादी एक ऐसे आदमी से हो रही है जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा।'

'तो इसमें प्राण देने की क्या बात है ? शादी के बाद तो देख ही लोगी उसे।'

'किन्तु मैं यह शादी नहीं करना चाहती।'

'क्यों ?' रूपा ने पूछा, 'क्या तुम्हारे होने वाले पति बहुत कुरूप हैं ?'

'नहीं—वह तो अच्छे हैं।'

'बुरे स्वभाव के हैं ?'

'यह बात भी नहीं···वह बहुत मिलनसार और अच्छे स्वभाव के हैं।'

'बहुत गरीब हैं ?'

'गरीब भी नहीं—आठ सौ रुपये महीने कमाते हैं।'

'फिर क्या अभाव है उनमें जो तुम उनसे शादी नहीं करना चाहतीं ?'

'मैं एक और लड़के से प्यार करती हूं।'

'ओहो—'रूपा ने लम्बी सांस ली, 'तो तुम अपने प्रेमी के साथ शादी करना चाहती हो ?'

'हाँ—।'

'तो क्या तुम्हारे माता-पिता तैयार नहीं ?'

'मेरे केवल पिता हैं—मां स्वर्गवास हो चुकी हैं।'

'ओह !'

'जब उन्होंने मेरी शादी निश्चित की थी तो उन्हें मेरे प्यार का ज्ञान नहीं था कल मैंने चुपके से उन्हें चिट्ठी लिखकर दे दी कि मैं राजन से प्यार करती हूं और केवल उसी से शादी करूंगी।'

'और तुम्हारे पिता ने तुम्हें बुरा-भला कहा होगा ?'

'नहीं, पिताजी तो मुझे बहुत प्यार करते हैं—उन्होंने तो राजन से मिलने की इच्छा व्यक्त की थी और कहा था कि अगर लड़का अच्छा हुआ तो उन्हें पहला रिश्ता तोड़ कर इस शादी से कोई आपत्ति नहीं।'

'फिर—?'

'मैंने राजन से बड़े हर्ष से यह बात कह दी थी।'

कहते-कहते लड़की की आवाज भर्रा गई—रूपा ने पूछा—

'फिर क्या हुआ ?'

'राजन ने मुझे ठुकरा दिया।'

'क्या मतलब ?' रूपा और रचना चौंक पड़ीं।

'राजन ने कहा कि उसकी शादी किसी धनवान की लड़की से निश्चित हो गई है और वह प्यार पर अपने भविष्य को भेंट नहीं चढ़ा सकता।'

लड़की फिर रो पड़ी। रूपा ने ठंडी सांस ली और लड़की के कन्धे पर हाथ रखकर बोली—

'देखो बहन ! जीवन एक बहुत बड़ी कड़वी सच्चाई का दूसरा नाम है... राजन ने निस्सन्देह तुमसे प्यार किया होगा लेकिन जब उसे किसी और लड़की से शादी करने में अपना भविष्य निखरा नजर आया तो उसने तुम्हें ठुकरा दिया— लेकिन इसमें राजन का दोष नहीं बहन···तुम्हारी भूल है।'

जी—!!'

'और क्या बहन, जितना प्यार तुमने शादी से पहले राजन से किया है उतन[illegible] प्यार शादी के बाद अपने पति से करत[illegible] आज यह दिन देखना न पड़ता।'

लड़की आश्चर्य से रूपा को देख[illegible] थी। रूपा ने फिर कहा—

'हाँ बहन, दुनिया की सबसे बड़ी स[illegible] वह प्रेम नहीं है जिसका खेल हम नौज[illegible] में खेलते हैं···इस प्रेम में कितने प्रेमियो[illegible] सफलता मिली है !! स्त्री का असली [illegible] उसका पति होता है जिसके साथ उसको [illegible] पूरा जीवन निभाना होता है—अगर तुम [illegible] से पहले ही अपने पति का वह अधिकार [illegible] अन्य पुरुष को दे देती हो जिससे तुम्हारी [illegible] नहीं हो पाती···तो तुम्हारे पास क्या रह [illegible] है अपने पति को देने के लिए ?'

लड़की कुछ न बोली···वह भौंचक्क[illegible] आँखें फाड़े हुए रूपा को देख रही थी। [illegible] ने उसके कन्धे पर हाथ रखा और प्या[illegible] बोली—

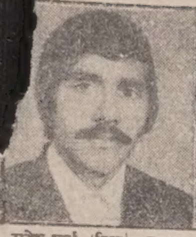
'अब तुम स्वयं सोचो बहन···तुम रा[illegible] के लिए प्राण देने जा रही हो···और रा[illegible] को तुम्हारी तनिक भी परवाह नहीं है··· एक धनी लड़की से शादी करेगा [illegible] उसके कानों में यह भनक भी न पड़ने [illegible] कि वह तुमसे प्यार करता था—जितना प्[illegible] उसने तुम्हें शादी से पहले दिया है उ[illegible] अधिक प्यार वह अपनी पत्नी को देगा [illegible] धीरे-धीरे उसके मन से तुम्हारा विच[illegible] बिल्कुल निकल जाएगा जैसे तुमसे कभी [illegible] की भेंट भी नहीं हुई थी··· इसलिए तु[illegible] अपने प्राण गँवाने का क्या लाभ ?

अच्छा हो कि तुम राजन को ऐसे [illegible] भुला दो जैसे उसने तुम्हें भुला दिया है औ[illegible] अपने उस मंगेतर से सहर्ष शादी कर [illegible] जिससे तुम्हारे पिता ने तुम्हारी शादी निश्च[illegible] की है। तुम कहती हो वह सुन्दर भी है [illegible] अच्छा कमाऊ भी है और अच्छे स्वभाव [illegible] भी है—अब तुम कल्पना करो कि तुम[illegible] जितना प्यार राजन को दिया था उतना [illegible] प्यार अपने पति को दो तो तुम्हारा जीव[illegible] कितना शान्त और सुखमय बीतेगा—औ[illegible] पति से न बिछुड़ने का डर होता है न ठुकरा[illegible] जाने का—अगर तुम अपने पति के मन [illegible] स्थान बना लो तो कितना सुख-चैन मिलेगा [illegible]

लड़की के होंठों से कंपकंपाती आवा[illegible] निकली—

(शेष आगामी अंक में)

...१/२४५४ ... बम्बई, ...त्र-मित्रता ...संग्रह, देखा

राजेश शर्मा 'प्रिन्स', मुकाम व पोस्ट बालेश्वर, जिला जोधपुर (राज०), २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, घूमना, पढ़ना-लिखना।



धर्मपाल केशव, करनाल ऐवियेशन क्लब करनाल (हरियाणा), १६ वर्ष, पत्र-व्यवहार करना, आकाश में आवारा घूमना।



विजय कुमार गुप्ता, (पी० ए०), ६१, जवाहर मार्केट, १६ वर्ष, फोटो खपवाना, तीन दोस्त इकट्ठे करना तथा मित्रता निभाना।



प्रीतपाल सिंह, पुत्र एस० सुरजीत सिंह 'आजाद' सोधी इन्दर सिंह स्ट्रीट धर्मपुरा, फिरोजपुर सीटी (पंजाब), १५ वर्ष, पेन फ्रेंड बनाना।



सर्वेश कुमार जैन, बी० ४/६ लोधी कालोनी नई दिल्ली, १३ वर्ष, दीवाना बनना, मटर गश्ती करना तथा टिकट जमा करना।



कन्हैया लाल खावरानी द्वारा राम मन्दिर के पास पोस्ट मनेन्द्रगढ़, जिला सरगुजा (म० प्र०), १८ वर्ष, चिरस्थायी पत्र-मित्रता करना।

...ता, कृषि ...समसटार, ... २६३५, ...त्रता तथा

सीता राम शाही, मकान नं० १७८/२, अहमद गढ़, जिला संगरूर, १६ वर्ष, पुस्तकें पढ़ना, गाना बजाना और मित्रता करना।



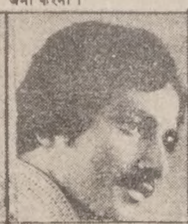
मनोज कुमार विक्रम, पो० बाक्स २४, आगरा रोड, अलीगढ़, २२ वर्ष, लेखन, समाज सेवा, पत्र-मित्रता, डाक-टिकट संग्रह।



सुनील कुमार शर्मा, मो० सिहान (घास मण्डी), मकान नम्बर २५६ काशीपुर (नैनीताल), १७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, घूमना।



ललित भारद्वाज, स्टेशन के पास, मन्दसौर (म० प्र०), १८ वर्ष, एक भी फिल्म नहीं छोड़ना, दूसरों के साथ झगड़ा करना।



सतीश सपरा 'कंचन' ३१-बी राजगढ़ कालोनी, गांधी नगर, दिल्ली, १८ वर्ष, फोटोग्राफी करना, हसना और दूसरों को खूब हंसाना।



सुशील कुमार आजाद, अध्यक्ष बनमनखी रेडियो श्रोता संघ बनमनखी पूर्णिया (बिहार), १८ वर्ष, फर्माइश भेजना, पत्र-मित्रता करना।

...हुआ, २६ ...शौर, १६ ... पत्रिकायें ...रीबों की

नारायण दत्त शर्मा, गांधी रोड, बड़ौत, मेरठ (यू०पी०), १६ वर्ष, जासूसी करना, अपराधियों को दण्ड देना, ईमानदारी बरतना।



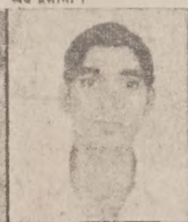
अनिल कुमार दीक्षित 'राबर्ट' १०६/१८० जवाहर नगर, कानपुर, १६ वर्ष, पढ़ाई करना, दूर-दूर जाकर क्रिकेट खेलना।



अशोक जैन द्वारा लालचन्द चौरसिया नदी रोड रहली, सागर (म० प्र०), १६ वर्ष, देश-विदेश में पत्र-मित्रता, शायरी करना।



विजय कुमार गुप्ता, मकान नम्बर ५४०६, लड्डूघाटी पहाड़ गंज, नई दिल्ली, १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना तथा पत्र-मित्रता करना।



कफील अहमद 'सबील' द्वारा श्री सलील अहमद, बदकूनपुरा, ला० नं० १३, हल्द्वानी, १६ वर्ष, उपन्यास लिखना, कहानी लिखना।



किशोर कुमार होतवानी, कटोरा तालाब रायपुर (म० प्र०), १८ वर्ष, बच्चों से प्यार करना, शायरी लिखना, पेन फ्रेंड बनाना।

..., हुस्न- ... (बिहार) ... करना, ..., दौड़ना,

...ज्ञानी, ११-ए, एम०-एल० ... बम्बई, १७ ... खेलना, क्रिकेट



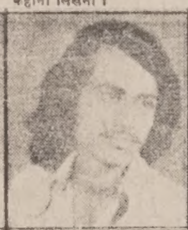
भीम रत्न तुलाधर, ११/६४ असन कमलाक्षी, काठमांडो, नेपाल, १३ वर्ष पढ़ना, बाल कम रखना, बालकों के साथ खेलना।



कृष्ण कुमार चन्देल 'बॉई' ४३ सुधाकर साउथ मार्केट किदवई नगर, नई दिल्ली, २० वर्ष, फोटो संग्रह करना, लेख लिखना।



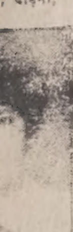
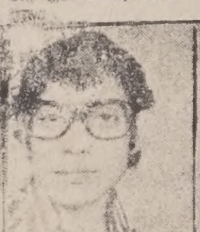
मो० साहिद इमाम, ब्लाक ३१/२३६, राजेन्द्र नगर, पटना, १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना, गाना सुनना, दोस्ती करना, पढ़ना।



मानिक कुमार जे० के० रिषयूजी कालोनी डालटन गंज, पलामू (बिहार), २२ वर्ष, गिटार बजाना, गीत गाना, कार चलाना।



ओम प्रसाद 'पुजारी' पो० दुलियाजान 'ए' २६३ (असम), १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, शेर व शायरी करना।

...की कालो... नम्बर ...हार, अग... ...र्ष, दौ...

गोविन्द प्रसाद रणधीर, बुधमल जी नारायण चन्द रणधीर, सरदार शहर, २५ वर्ष, नावल पढ़ना, सिनेमा देखना, खेलना।



हरीश कुमार खत्री, ८६, म्युनिसिपल आफिस रोड, इन्दौर, ८ वर्ष, टेबल टेनिस खेलना, अच्छी-अच्छी किताबें पढ़ना, हंसना।



मुहम्मद तारिक कुरेशी पुत्र ए० एम० कुरेशी, ४६६ मुहम्मद जय, डा० सेन रोड, शाहजहांपुर, १५ वर्ष, पत्र-मित्रता, करना क्रिकेट खेलना।



मुहम्मद आरिफ अमरोही कमरा नम्बर १, एन० आई० के० होस्टल, एस० मसूद हाल, ए० एम० यू० अलीगढ़, १७ वर्ष, कार चलाना।

...ना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____________

____

पता ____________

____

आयु ______ शौक ______

..., दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

है उतना ही
ने करती तो

देख रही

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

३ अगस्त से ९ अगस्त ७८ तक



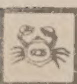
मेष : यह सप्ताह आपके लिए संघर्ष और उतार-चढ़ाव लेकर आया है दीर्घकाल से चली आ रही समस्याएं अभी भी कायम रहेंगी, दौड़-धूप काफी करनी होगी, आय-व्यय समान रहेगा।



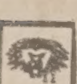
वृष : इन दिनों जोश, क्रोध या जल्दबाजी में कोई कदम न उठाएं वरना पछताना पड़ेगा, स्थाई साधनों से धन लाभ होता रहेगा, सहयोग देने वाले अनेक मित्र मिल जायेंगे, आत्म विश्वास दृढ़ रहेगा।



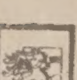
मिथुन : यह सप्ताह अनेक शुभफलों से युक्त होने पर भी संघर्षपूर्ण सा प्रतीत होगा, कोई दुर्घटना होते-होते बच जाएगी, भाग्य साथ देगा और परिस्थितियां भी धीरे-धीरे सुधरती जावेंगी।



कर्क : यह सप्ताह भी प्रायः पहले जैसा ही रहेगा और काफी उतार-चढ़ाव भी आते रहेंगे, सफलता के मार्ग में रुकावटें आयेंगी परन्तु किसी विशेष व्यक्ति के सहयोग से आप कठिनाइयों पर काबू पा सकेंगे।



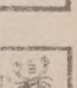
सिंह : इन दिनों कोई पुरानी समस्या फिर भी पैदा हो सकती है, यह सप्ताह कुछ संघर्षपूर्ण सा महसूस तो होगा फिर भी आपके काम पूरे होते रहेंगे और प्रयास करने पर लाभ होगा।



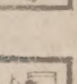
कन्या : शत्रुओं और बाधाओं पर विजय मिलेगी, और किसी विशेष समस्या से छुटकारा मिल जावेगा, कामकाज की स्थिति में सुधार होगा, घरेलू हालात से परेशानी बनी रहेगी, मित्रों से सहयोग मिलेगा।



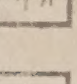
तुला : यह सप्ताह अच्छा है फिर भी घरेलू परेशानी रहने से कारोबारी क्षेत्र में भी रुकावटें आ सकती हैं, फिर भी आर्थिक लाभ अच्छा होता रहेगा, धर्म कर्म में रुचि, कई तरह के सुधार होते महसूस होंगे।



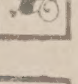
वृश्चिक : इन दिनों कोई विशेष घटना हो सकती है, जिससे परेशानी काफी बढ़ जाएगी, परन्तु आर्थिक दृष्टि से देखा जाए तो सप्ताह अच्छा रहेगा, नई योजना के साथ व्यापार में वृद्धि होगी।



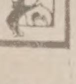
धनु : इस सप्ताह को विशेष अच्छा नहीं कहा जा सकता, दीर्घकाल से चली आ रही समस्याएं अभी भी पीछा न छोड़ेंगी, स्थाई साधनों से धन लाभ होता रहेगा, घरेलू योजनाओं पर व्यय काफी होगा।



मकर : व्यापार में रुचि कम लगेगी, कुछ बाधाएं भी उत्पन्न होंगी परन्तु किसी विशेष व्यक्ति से सहयोग मिल जावेगा और आपको अपनी योजनाओं में सफलता मिलती रहेगी, विरोधी मुंह की खायेंगे।



कुम्भ : परिश्रम करने पर शुभ अशुभ मिश्रितफल मिलते रहेंगे, सप्ताह है तो काफी अच्छा परन्तु इन दिनों संघर्ष भी काफी आवेंगे, किसी न किसी कारण परेशानी बनी ही रहेगी।



मीन : अधिकतर समय सोशल कामों में ही व्यतीत होगा, कुछ नई आशाएं जाग उठेंगी, प्रयत्न करने पर कुछ बिगड़े काम बन जायेंगे, धार्मिक कामों में रुचि बनेगी, समस्याएं अभी भी काफी रहेंगी।



काजल किरण

विजय भारद्वाज

इनका वास्तविक नाम है सुनीता कुलकर्णी! इनका जन्म दिवस है अट्ठाईस अगस्त! फिल्म उद्योग में निर्माता निर्देशक नासिर हुसैन ने इन्हें पर्दे पर पेश किया। इन्हें निर्माता निर्देशक नासिर हुसैन की खोज भी कहा जाये तो अनुचित न होगा।

अपनी पहली ही फिल्म 'हम किसी से कम नहीं' में इन्होंने उभरते अभिनय का परिचय दिया है। फिल्म जितनी सफल रही उससे भी अधिक चर्चित रहीं काजल किरण। अभी यह नासिर हुसैन द्वारा अनुबंधित हैं अतः उन्हीं की फिल्मों में काम करेंगी या उनसे आज्ञा लेकर दूसरी फिल्में साइन करेंगी।

इण्टर (अपूर्ण) तक इन्होने शिक्षा प्राप्त की है।

संगीत में रुचि रखने वाली काजल किरण ना केवल बेहद सुन्दर हैं अपितु स्वर की मृदु भी हैं। इन्हें गीत गाने का भी शौक है। इसी सम्बन्ध में मैंने उनसे प्रश्न पूछा, "क्या आपकी रुचि गायिका बनने की तरफ भी है जैसे सुलक्षणा.........?

मेरी बात बीच में ही काटती बोल उठीं, "ना बाबा ना! मैं केवल रूम सिंगर' हूं। बाथरूम के बाहर नायिका रहना चाहती हूं! गीत गु को आप मेरी हाबी......क्या कहते हैं शौक कह सकते हैं।"

का र किरण से बात करने प चला कि उनका दिल काजल जैसा नहीं है। बातें काकपन, स्पष्ट और रहमदिल न।

"ऋषि कलाकार 'हम किसी से क में आपको रियरटी कम्प्लेक्स नहीं हुआ

"बिल्कुल ! ऋषि जी बड़े रेटिव हैं। शूटिंग के दौरान वह नये कारों में एकदम घुल-मिल जाते हैं सीनियरटी के चक्कर में विश्वास नहीं फिल्मों में आने से पूर्व मैं उनकी 'फैन' काजल किरण ने मुस्कराते हुये "दीवाना साप्ताहिक के पाठकों को मेरी से नमस्कार।"

क्वीन्स डिपार्ट
पार्ली हिल
बम्बई-४००